

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १७ / २२ · Volume 17 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन	२५०० प्रश्न
प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।	
In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.	

अध्याय १ : विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 3800 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

१. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गीत-संग्रह समीक्षा

५. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गीत-संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3801 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"

११. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१५. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3802 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी

२१. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा

२५. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3803 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

३१. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन

३५. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3804 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: पंजी-प्रबन्ध

४१. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पंजी-प्रबन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पञ्जी परम्परा परिचय

४५. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पञ्जी परम्परा परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पञ्जी परम्परा परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3805 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मिथिला कला

५१. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला कला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला चित्रकला परिचय

५५. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला चित्रकला परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला चित्रकला परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3806 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)

६१. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विस्मृत साहित्यकारक उद्धार

६५. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विस्मृत साहित्यकारक उद्धार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3807 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'

७१. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संगीत परम्परा

७५. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संगीत परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतसँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा, रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संगीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3808 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)

८१. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध

८५. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3809 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुरक: म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य

९१. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक दार्शनिक परम्परा

१५. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक दार्शनिक परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3810 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली भाषापाक १-३

१०१. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली भाषापाक १-३
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भाषाशास्त्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषा अध्ययन

१०५. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषा अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3811 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: की अहाँकेँ बुझल अछि?

१११. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) की अहाँकेँ बुझल अछि?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा चेतना जागरण

११५. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा चेतना जागरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकें बुझल अछि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकें बुझल अछि?”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकें बुझल अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकें बुझल अछि?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3812 : विदेह-सदेह 30 — श्री मैथिली पुत्र प्रदीप: आध्यात्म

१२१. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आध्यात्म
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आध्यात्मिक निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा

१२५. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आध्यात्मिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध आ “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3813 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा

१३१. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनुवाद कृति समीक्षा

१३५. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनुवाद कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अनुवाद कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3814 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा

१४१. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१४५. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक "गामक जिनगी" समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3815 : विदेह-सदेह 30 — धनाकर ठाकुर: फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा

१५१. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य समीक्षा

१५५. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “बाल साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3816 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा

१६१. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक

१६५. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3817 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: विहनि कथा संसार

१७१. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विहनि कथा संसार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा साहित्य समीक्षा

१७५. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा साहित्य समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कथा साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3818 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"

१८१. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

१८५. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ "क्षणिका"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकें अंगीकार करैछ "क्षणिका"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकें अंगीकार करैछ "क्षणिका"”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: मुन्ना जीक “अझुको क्षणकें अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक “अझुको क्षणकें अंगीकार करैछ "क्षणिका"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3819 : विदेह-सदेह 30 — मुन्ना जी: अनमोल झाक समयकें साक्षी राखि!

१९१. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकें साक्षी राखि!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनमोल झाक समयकें साक्षी राखि!
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकें साक्षी राखि!”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकें साक्षी राखि!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१९५. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3820 : विदेह-सदेह 30 — डा. रमण झा: फोंका-एक विहगावलोकन

२०१. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फोंका-एक विहगावलोकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

२०५. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3821 : विदेह-सदेह 30 — डा. रमण झा: मैथिली चित्रकथा

२११. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली चित्रकथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चित्रकथा विधाक अध्ययन

२१५. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चित्रकथा विधाक अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “चित्रकथा विधाक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3822 : विदेह-सदेह 30 — जीवकान्त: उत्तराधिकारी आ लेखक

२२१. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उत्तराधिकारी आ लेखक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लेखकीय दृष्टि

२२५. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लेखकीय दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लेखकीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3823 : विदेह-सदेह 30 — जीवकान्त: जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर

२३१. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समीक्षा

२३५. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3824 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. राजीव कुमार वर्मा: कारी घटा बरसैत मेघ

२४१. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कारी घटा बरसैत मेघ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति आ भावनात्मक गद्य

२४५. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति आ भावनात्मक गद्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3825 : विदेह-सदेह 30 — मानेश्वर मनुज: मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता

२५१. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आलोचना

२५५. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतसँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3826 : विदेह-सदेह 30 — मानेश्वर मनुज: मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू

२६१. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श

२६५. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्र/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि गद्य, पत्र/निबन्ध आ “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3827 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: भोथ हथियार

२७१. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भोथ हथियार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार

२७५. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3828 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: मैथिली बाल गजलक अवधारणा

२८१. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली बाल गजलक अवधारणा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल गजल सिद्धान्त

२८५. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल गजल सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3829 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: बहुरूपिया रचना मे

२९१. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहुरूपिया रचना मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रचना प्रक्रिया विमर्श

२९५. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रचना प्रक्रिया विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रिया विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3830 : विदेह-सदेह 30 — ओम प्रकाश झा: घोघ उठबैत गजल

३०१. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घोघ उठबैत गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल आन्दोलन

३०५. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल आन्दोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3831 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. बचेश्वर झा: समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल

३११. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

३१५. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3832 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

३२१. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक इतिहास

३२५. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “नाटक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3833 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)

३३१. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

३३५. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3834 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा

३४१. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

३४५. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3835 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा (अर्चिस)

३५१. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा (अर्चिस)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

३५५. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3836 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस

३६१. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा निबन्ध

३६५. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा निबन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3837 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

३७१. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक समीक्षा

३७५. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3838 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा

३८१. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक समीक्षा

३८५. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3839 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

३९१. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

३९५. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3840 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान

४०१. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास साहित्य इतिहास

४०५. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास साहित्य इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०९. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “उपन्यास साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3841 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': पृथ्वीपुत्र

४११. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पृथ्वीपुत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

४१५. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१९. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3842 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान

४२१. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा साहित्य इतिहास

४२५. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा साहित्य इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२९. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “कथा साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3843 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

४३१. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथाकाव्य समीक्षा

४३५. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथाकाव्य समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३९. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकाव्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3844 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': क्षणप्रभा

४४१. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) क्षणप्रभा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

४४५. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४९. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3845 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': बहिरा नाचए अपने ताल

४५१. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहिरा नाचए अपने ताल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

४५५. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५९. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3846 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मिथिलाक लोक देवता

४६१. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलाक लोक देवता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक संस्कृति अध्ययन

४६५. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक संस्कृति अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६९. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोक संस्कृति अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3847 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

४७१. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विमर्श

४७५. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७९. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3848 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श

४८१. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी विमर्श समीक्षा

४८५. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी विमर्श समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८९. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3849 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

४९१. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

४९५. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९९. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3850 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': निश्तुकी

५०१. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निश्तुकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

५०५. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०९. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निशुकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निशुकी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3851 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)

५११. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१४. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

५१५. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१९. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3852 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

५२१. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संकलन समीक्षा

५२५. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संकलन समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२९. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3853 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)

५३१. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

५३५. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३९. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3854 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

५४१. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४४. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चित्रकथा समीक्षा

५४५. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चित्रकथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४९. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3855 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- तरेगन

५५१. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- तरेगन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

५५५. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५९. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3856 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)

५६१. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

५६५. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६९. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3857 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

५७१. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य इतिहास

५७५. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७९. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “बाल साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3858 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

५८१. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८४. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित विमर्श समालोचक

५८५. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित विमर्श समालोचक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८९. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “दलित विमर्श समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3859 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': पोथी- समीक्षा-भावांजलि

५९१. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी- समीक्षा-भावांजलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९४. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

५९५. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९९. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3860 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': रमाजीक काव्य यात्रा

६०१. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रमाजीक काव्य यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०४. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) काव्य यात्रा समीक्षा

६०५. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) काव्य यात्रा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०९. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “काव्य यात्रा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3861 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)

६११. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१४. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संकलन समीक्षा

६१५. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संकलन समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१८. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१९. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3862 : विदेह-सदेह 30 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': समीक्षा- बिन वाती दीप जरय

६२१. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समीक्षा- बिन वाती दीप जरय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२४. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

६२५. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२८. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२९. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3863 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा

६३१. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३४. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

६३५. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३८. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३९. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3864 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु

६४१. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४४. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली पत्रकारिता इतिहास

६४५. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली पत्रकारिता इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४८. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४९. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3865 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी

६५१. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५४. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि व्यक्तित्व आलोचना

६५५. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि व्यक्तित्व आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५८. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५९. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६०. खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कवि व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3866 : विदेह-सदेह 30 — रमाकान्त राय 'रमा': पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास

६६१. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६४. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समीक्षा

६६५. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६८. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६९. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७०. खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3867 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व

६७१. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७४. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लघुकथा शिल्प

६७५. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लघुकथा शिल्प
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७८. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७९. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८०. खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/आलोचना आ “लघुकथा शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3868 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

६८१. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८४. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता

६८५. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८८. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८९. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९०. खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक “अदही पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3869 : विदेह-सदेह 30 — देवशंकर नवीन: बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)

६९१. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९४. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समालोचना

६९५. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समालोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९८. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९९. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७००. खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3870 : विदेह-सदेह 30 — मुन्नी कामत: कतऽ जा रहल छी हम!

७०१. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कतऽ जा रहल छी हम!
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०४. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्मचिन्तनपरक गद्य

७०५. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्मचिन्तनपरक गद्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०८. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०९. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१०. खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मचिन्तनपरक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3871 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह

७११. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१४. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेरक जीवनी

७१५. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेरक जीवनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१८. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१९. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२०. खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3872 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ

७२१. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२४. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेरक जीवनी

७२५. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेरक जीवनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२८. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२९. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३०. खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3873 : विदेह-सदेह 30 — जगदानन्द झा 'मनु': बाल गजलक अवधारणा

७३१. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजलक अवधारणा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३४. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य चिन्तन

७३५. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३८. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३९. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४०. खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3874 : विदेह-सदेह 30 — चंदन कुमार झा: मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल

७४१. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४४. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य समीक्षक

७४५. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४८. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४९. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५०. खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3875 : विदेह-सदेह 30 — चंदन कुमार झा: मिथिला-मैथिली आंदोलन

७५१. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला-मैथिली आंदोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५४. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक आन्दोलन समीक्षक

७५५. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक आन्दोलन समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५८. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५९. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६०. खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3876 : विदेह-सदेह 30 — उमेश मण्डल: मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य

७६१. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६४. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) युवा साहित्य विश्लेषण

७६५. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) युवा साहित्य विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६८. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६९. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७०. खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “युवा साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3877 : विदेह-सदेह 30 — श्री राजः यात्रीक कवितामे गाम

७७१. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यात्रीक कवितामे गाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७४. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण

७७५. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्री राज, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७८. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७९. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८०. खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3878 : विदेह-सदेह 30 — मिहिर झा: बाल गजल

७८१. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८४. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल गजल विमर्श

७८५. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल गजल विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८८. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८९. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९०. खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल गजल विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3879 : विदेह-सदेह 30 — अमित मिश्र: बाल गजल: कोमल करेजक आखर

७९१. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल: कोमल करेजक आखर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९४. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य विश्लेषण

७९५. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९८. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९९. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८००. खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3880 : विदेह-सदेह 30 — अमित मिश्र: कतिआएल आखर

८०१. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कतिआएल आखर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०४. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा शैली विश्लेषण

८०५. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा शैली विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०८. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०९. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१०. खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा शैली विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3881 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हारक: आधुनिकताक समस्या (आलोचना)

८११. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आधुनिकताक समस्या (आलोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१२. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१४. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल आन्दोलनक प्रणेता

८१५. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल आन्दोलनक प्रणेता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१८. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१९. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२०. खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलनक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3882 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: गजलक साक्ष्य- समालोचना

८२१. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजलक साक्ष्य- समालोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२४. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल शिल्प आलोचक

८२५. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल शिल्प आलोचक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२८. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२९. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३०. खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल शिल्प आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3883 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: की थिक बाल गजल

८३१. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) की थिक बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३४. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल गजल सिद्धान्त

८३५. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल गजल सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३८. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३९. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४०. खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3884 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि

८४१. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४४. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक चिन्तन

८४५. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४८. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४९. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५०. खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3885 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हार: बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान

८५१. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५४. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाट्य समीक्षा

८५५. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाट्य समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”

रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५८. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान”कें

विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५९. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि

विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६०. खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “नाट्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3886 : विदेह-सदेह 30 — आशीष अनचिन्हारक: काफिया, काफिया आ बहर

८६१. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) काफिया, काफिया आ बहर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६४. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल शिल्प गहन अध्ययन

८६५. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल शिल्प गहन अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६८. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६९. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७०. खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “गजल शिल्प गहन अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3887 : विदेह-सदेह 30 — बलराम साहु: विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति

८७१. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७४. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक संस्कृति चिन्तन

८७५. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक संस्कृति चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बलराम साहु, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७८. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” के विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७९. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८०. खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3888 : विदेह-सदेह 30 — शत्रुधन प्रसाद साह: मैथिली महिला आ जिद्दी

८८१. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली महिला आ जिद्दी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८४. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी विमर्श आ कथा समीक्षा

८८५. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी विमर्श आ कथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शत्रुघ्न प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८८. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८९. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९०. खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुघ्न प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3889 : विदेह-सदेह 30 — विजय मस्त: सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक

८९१. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९२. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९४. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन

८९५. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९८. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९९. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९००. खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3890 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'

९०१. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०२. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०३. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०४. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी साहित्य समालोचक

९०५. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी साहित्य समालोचक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्ता की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी साहित्य समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3891 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: 'अंगना सुखल घरमे पानि'

१११. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'अंगना सुखल घरमे पानि'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

११५. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'"कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक "'अंगना सुखल घरमे पानि'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "कृति समीक्षा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3892 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: खोजय पड़त मातृत्व बालगीत

१२१. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खोजय पड़त मातृत्व बालगीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य खोज

१२५. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य खोज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3893 : विदेह-सदेह 30 — कैलास दास: म्याराथन दौड़ आ जनकपुर

१३१. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) म्याराथन दौड़ आ जनकपुर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक सरोकार

१३५. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक सरोकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3894 : विदेह-सदेह 30 — डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन": पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

१४१. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पंचदेवोपासक भूमि मिथिला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पवित्र भूगोल

१४५. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पवित्र भूगोल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन", विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला"कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "पंचदेवोपासक भूमि मिथिला" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3895 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास

१५१. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली प्रविधि

१५५. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली प्रविधि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली प्रविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3896 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत

१६१. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक पर्व

१६५. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3897 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: जितिया पावनि

९७१. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जितिया पावनि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७२. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७३. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७४. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक पर्व

९७५. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७६. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७७. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७८. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3898 : विदेह-सदेह 30 — मनोज मुक्ति: मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

१८१. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक पत्रकारिता

१८५. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक पत्रकारिता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3899 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': शब्द विभक्ति सम्वाद

१९१. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शब्द विभक्ति सम्वाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास

१९५. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०००. खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3900 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': अनुवाद

१००१. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनुवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००२. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००३. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००४. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनुवाद चिन्तन

१००५. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनुवाद चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००६. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००७. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००८. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००९. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१०. खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अनुवाद चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3901 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी

१०११. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१२. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१३. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) इतिहास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१४. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली शिक्षा इतिहास

१०१५. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली शिक्षा इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१६. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१७. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१८. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१९. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२०. खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “मैथिली शिक्षा इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3902 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे

१०२१. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२२. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२३. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) इतिहास/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२४. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह आर्काइव

१०२५. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह आर्काइव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२६. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२७. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२८. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ इतिहास/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२९. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३०. खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/निबन्ध आ “विदेह आकाइव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3903 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

१०३१. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३२. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३३. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३४. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित लोकगाथा शोध

१०३५. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित लोकगाथा शोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३६. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभट्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३७. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभट्टी”क रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३८. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभट्टी”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३९. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभट्टी”क प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४०. खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभट्टी” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दलित लोकगाथा शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3904 : विदेह-सदेह 30 — डा.रमानन्द झा 'रमण': सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा

१०४१. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४२. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४३. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४४. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानवाधिकार अनुवाद

१०४५. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानवाधिकार अनुवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४६. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४७. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४८. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४९. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५०. खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “मानवाधिकार अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3905 : विदेह-सदेह 30 — हृदय नारायण झा: लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

१०५१. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५२. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५३. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/संकलन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५४. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोकगीत संरक्षण

१०५५. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोकगीत संरक्षण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५६. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक हृदय नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/संकलन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५७. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५८. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५९. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६०. खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि गद्य, शोध/संकलन आ “लोकगीत संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3906 : विदेह-सदेह 30 — कृपानन्द झा: मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र

१०६१. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६२. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६३. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६४. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक कथा

१०६५. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६६. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६७. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६८. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०६९. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७०. खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “राजनीतिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3907 : विदेह-सदेह 30 — कृपानन्द झा: चौकपर आणविक समझौता

१०७१. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चौकपर आणविक समझौता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७२. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७३. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७४. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परमाणु राजनीति

१०७५. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परमाणु राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७६. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७७. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७८. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७९. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८०. खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परमाणु राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3908 : विदेह-सदेह 30 — महेन्द्र मलंगिया: मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व

१०८१. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८२. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८३. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८४. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण

१०८५. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८६. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८७. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८८. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८९. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९०. खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक/आलोचना आ “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3909 : विदेह-सदेह 30 — महेन्द्र मलंगिया: प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन

१०९१. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९२. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९३. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९४. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना

१०९५. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगकर्मी व्यक्तित्व आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९६. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९७. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९८. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९९. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११००. खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3910 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

११०१. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०२. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०३. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०४. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल शिल्प विश्लेषण

११०५. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल शिल्प विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०६. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०७. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०८. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११०९. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११०. खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल शिल्प विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3911 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षिक: नव भोर जोहैत मिथिला

११११. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव भोर जोहैत मिथिला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११२. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११३. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११४. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) सांस्कृतिक अध्ययन
१११५. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) सांस्कृतिक अध्ययन
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१११६. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१११७. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
१११८. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
१११९. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
११२०. खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3912 : विदेह-सदेह 30 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

११२१. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२२. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२३. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२४. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक पर्व विश्लेषण

११२५. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक पर्व विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२६. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२७. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२८. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” के विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११२९. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३०. खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3913 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही

११३१. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३२. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३३. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३४. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक संस्मरण

११३५. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक संस्मरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३६. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३७. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३८. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३९. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४०. खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3914 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।

११४१. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४२. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४३. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४४. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यक्तित्व रेखांकन

११४५. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यक्तित्व रेखांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४६. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४७. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४८. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४९. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५०. खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3915 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम

११५१. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५२. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५३. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५४. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्मकथात्मक

११५५. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्मकथात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५६. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकें शत-शत प्रणाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५७. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकें शत-शत प्रणाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५८. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकें शत-शत प्रणाम”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११५९. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकें शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६०. खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकें शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3916 : विदेह-सदेह 30 — अमरनाथ झा: आचार्य पंकज

११६१. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आचार्य पंकज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६२. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६३. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६४. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यक्तित्व रेखांकन

११६५. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यक्तित्व रेखांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६६. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६७. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६८. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११६९. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७०. खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3917 : विदेह-सदेह 30 — उदय नारायण सिंह "नचिकेता": गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

११७१. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७२. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७३. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७४. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सीआइआइएल

११७५. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सीआइआइएल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७६. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७७. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७८. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक"क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११७९. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८०. खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "सीआइआइएल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3918 : विदेह-सदेह 30 — उदय नारायण सिंह "नचिकेता": गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

११८१. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८२. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८३. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८४. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली मानकीकरणक प्रणेता

११८५. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली मानकीकरणक प्रणेता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८६. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८७. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८८. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर"कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८९. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९०. खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "मैथिली मानकीकरणक प्रणेता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3919 : विदेह-सदेह 30 — विनीत उत्पल: आजुक कालमे बाबा

११९१. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक "आजुक कालमे बाबा" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आजुक कालमे बाबा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९२. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९३. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९४. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श

११९५. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९६. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९७. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९८. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९९. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२००. खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3920 : विदेह-सदेह 30 — विनीत उत्पल: कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

१२०१. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०२. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०३. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०४. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाख्तिनीय संवाद

१२०५. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाख्तिनीय संवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०६. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०७. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०८. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२०९. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१०. खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाख्तिनीय संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3921 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. गंगेश गुंजन: कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर

१२११. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१२. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१३. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१४. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार

१२१५. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१६. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१७. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१८. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२१९. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२०. खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3922 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट

१२२१. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२२. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२३. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२४. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिस्थितिक लेखन

१२२५. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिस्थितिक लेखन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२६. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२७. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२८. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२९. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३०. खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पारिस्थितिक लेखन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3923 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !

१२३१. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३२. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३३. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३४. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक परम्परा

१२३५. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३६. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३७. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” रचना/लेखककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३८. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२३९. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४०. खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “लोक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3924 : विदेह-सदेह 30 — रामभरोस कापडि 'भ्रमर': संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा

१२४१. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४२. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४३. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४४. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोसी बाढ़ि आख्यान

१२४५. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि आख्यान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४६. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४७. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४८. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४९. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५०. खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कोसी बाढ़ि आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3925 : विदेह-सदेह 30 — कमलानन्द झा: मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण

१२५१. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५२. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५३. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५४. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अकादमिक साहित्यिक समीक्षा

१२५५. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अकादमिक साहित्यिक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५६. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कमलानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५७. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५८. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२५९. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६०. खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3926 : विदेह-सदेह 30 — डॉ पालन झा: सन्त साहेब रामदास

१२६१. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सन्त साहेब रामदास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६२. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६३. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६४. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति परम्परा

१२६५. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६६. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६७. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६८. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२६९. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७०. खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3927 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

१२७१. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७२. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७३. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७४. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला राज्य चिन्तक

१२७५. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला राज्य चिन्तक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७६. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७७. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७८. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२७९. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८०. खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “मिथिला राज्य चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3928 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

१२८१. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८२. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८३. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८४. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक पहचान

१२८५. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक पहचान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८६. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८७. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८८. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८९. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९०. खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3929 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...

१२९१. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९२. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९३. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९४. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक चिन्ता

१२९५. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक चिन्ता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९६. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९७. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९८. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९९. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३००. खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3930 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: हमर सपना केर मिथिला

१३०१. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर सपना केर मिथिला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०२. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०३. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०४. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भविष्यक मिथिला

१३०५. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भविष्यक मिथिला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०६. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०७. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०८. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३०९. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१०. खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भविष्यक मिथिला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3931 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..

१३११. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१२. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१३. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१४. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा आन्दोलन

१३१५. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा आन्दोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१६. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१७. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१८. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३१९. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२०. खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3932 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

१३२१. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२२. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२३. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२४. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आपदा प्रबन्धन

१३२५. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आपदा प्रबन्धन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२६. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२७. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२८. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२९. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३०. खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आपदा प्रबन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3933 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मिथिला मंथन १-२

१३३१. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला मंथन १-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३२. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३३. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३४. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) क्षेत्रीय विकास

१३३५. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) क्षेत्रीय विकास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३६. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३७. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३८. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३३९. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४०. खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “क्षेत्रीय विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3934 : विदेह-सदेह 30 — सुशांत झा: मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि

१३४१. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४२. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४३. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४४. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा सांस्कृतिक सक्रियता

१३४५. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा सांस्कृतिक सक्रियता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४६. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४७. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४८. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४९. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५०. खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3935 : विदेह-सदेह 30 — शक्ति शेखर: कखन बदलब हम

१३५१. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कखन बदलब हम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५२. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५३. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५४. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक परिवर्तन चिन्तन

१३५५. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक परिवर्तन चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५६. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शक्ति शेखर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५७. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५८. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३५९. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६०. खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3936 : विदेह-सदेह 30 — ओमप्रकाश झा: मिथिले तक नहि छथि मैथिल

१३६१. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिले तक नहि छथि मैथिल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६२. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६३. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६४. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिल पहचान

१३६५. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिल पहचान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६६. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६७. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६८. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३६९. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७०. खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिल पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3937 : विदेह-सदेह 30 — बी.के कर्ण: संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन

१३७१. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७२. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७३. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७४. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त

१३७५. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७६. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बी.के कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७७. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के.कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७८. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के.कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३७९. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: बी.के.कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८०. खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के.कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3938 : विदेह-सदेह 30 — जितेन्द्र झा: स्वरक माला गँथती अंशु

१३८१. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्वरक माला गँथती अंशु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८२. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८३. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८४. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जनकपुर, नेपाल

१३८५. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जनकपुर, नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८६. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८७. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८८. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८९. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९०. खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3939 : विदेह-सदेह 30 — जितेन्द्र झा: प्रिय पाहुन

१३९१. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रिय पाहुन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९२. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९३. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९४. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह क्रॉस-बोर्डर

१३९५. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह क्रॉस-बोर्डर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९६. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९७. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९८. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९९. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४००. खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “विदेह क्रॉस-बोर्डर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3940 : विदेह-सदेह 30 — महाप्रकाश: सुभाष चन्द्र यादव

१४०१. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुभाष चन्द्र यादव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०२. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०३. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) परिचय/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०४. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथाकारक रेखांकन

१४०५. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथाकारक रेखांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०६. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा परिचय/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०७. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०८. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ परिचय/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४०९. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१०. खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि गद्य, परिचय/समीक्षा आ “कथाकारक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3941 : विदेह-सदेह 30 — ज्योति प्रकाश लाल: आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

१४११. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१२. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१३. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१४. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सॉफ्टवेयर इंजीनियर

१४१५. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सॉफ्टवेयर इंजीनियर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१६. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१७. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१८. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४१९. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२०. खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3942 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी

१४२१. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२२. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२३. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२४. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मुम्बई

१४२५. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मुम्बई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२६. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२७. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२८. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४२९. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३०. खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3943 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: कन्या भ्रूण हत्या

१४३१. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कन्या भ्रूण हत्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३२. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३३. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३४. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बोउआ

१४३५. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बोउआ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३६. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३७. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३८. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४३९. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४०. खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “बोउआ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3944 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: प्रकृति के साथ खिलवार

१४४१. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रकृति के साथ खिलवार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४२. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४३. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४४. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पर्यावरण चेतना

१४४५. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पर्यावरण चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४६. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४७. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४८. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४९. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५०. खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3945 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: हम लड़की वला छी जनाब ...

१४५१. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम लड़की वला छी जनाब ...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५२. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५३. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५४. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारीवादी विमर्श

१४५५. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारीवादी विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५६. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५७. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५८. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४५९. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६०. खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नारीवादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3946 : विदेह-सदेह 30 — जितमोहन झा: नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?

१४६१. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६२. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६३. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६४. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लैंगिक असमानता

१४६५. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लैंगिक असमानता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६६. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६७. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६८. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४६९. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७०. खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “लैंगिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3947 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: बिहारक लोक पर्व-छठि

१४७१. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिहारक लोक पर्व-छठि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७२. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७३. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७४. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक पर्व

१४७५. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७६. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७७. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७८. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४७९. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८०. खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3948 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र

१४८१. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८२. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८३. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८४. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक पत्रकारिता

१४८५. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक पत्रकारिता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८६. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८७. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८८. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८९. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९०. खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3949 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति

१४९१. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९२. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९३. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९४. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक स्मृति

१४९५. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक स्मृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९६. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९७. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९८. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९९. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५००. खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3950 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला

१५०१. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०२. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०३. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०४. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक पत्रकारिता

१५०५. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक पत्रकारिता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०६. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०७. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०८. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५०९. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१०. खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सामाजिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3951 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर

१५११. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१२. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१३. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१४. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक मुद्दा

१५१५. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक मुद्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१६. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१७. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१८. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५१९. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२०. खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3952 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ

१५२१. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२२. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२३. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२४. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक सक्रियता

१५२५. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक सक्रियता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२६. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२७. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२८. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५२९. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३०. खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सामाजिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3953 : विदेह-सदेह 30 — नवेन्दु कुमार झा: गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी

१५३१. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३२. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३३. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३४. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विज्ञान चेतना

१५३५. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विज्ञान चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३६. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३७. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३८. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५३९. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४०. खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3954 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी

१५४१. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४२. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४३. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४४. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक जीवनी

१५४५. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक जीवनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४६. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४७. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४८. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५४९. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५०. खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “सामाजिक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3955 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर

१५५१. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५२. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५३. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५४. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कलाकार व्यक्तित्व

१५५५. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कलाकार व्यक्तित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५६. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५७. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५८. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५५९. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६०. खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “कलाकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3956 : विदेह-सदेह 30 — सुजीत कुमार झा: थाल माटिक पावनि

१५६१. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) थाल माटिक पावनि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६२. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६३. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६४. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साक्षात्कार शैली

१५६५. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साक्षात्कार शैली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६६. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६७. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६८. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५६९. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७०. खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “साक्षात्कार शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3957 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. उमेश मंडल: मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर

१५७१. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७२. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७३. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७४. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समीक्षा

१५७५. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७६. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७७. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७८. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५७९. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८०. खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3958 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. उमेश मंडलक: कबिलपुरक कथा गोष्ठी

१५८१. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कबिलपुरक कथा गोष्ठी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८२. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८३. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८४. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आयोजन

१५८५. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आयोजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८६. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८७. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८८. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८९. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९०. खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3959 : विदेह-सदेह 30 — प्रा परमेश्वर कापड़ि: मानकताक बात विखपाद अछि !

१५९१. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़ि “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मानकताक बात विखपाद अछि !
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९२. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९३. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९४. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

१५९५. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९६. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९७. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९८. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९९. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६००. खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3960 : विदेह-सदेह 30 — प्रा परमेश्वर कापड़ि: छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व

१६०१. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०२. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०३. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०४. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक पर्व

१६०५. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०६. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०७. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०८. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६०९. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१०. खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3961 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: सोचब आवश्यक जे.....

१६११. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सोचब आवश्यक जे.....
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१२. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१३. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१४. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषा चिन्तक

१६१५. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषा चिन्तक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१६. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१७. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१८. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६१९. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२०. खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3962 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मातृभाषा दिवस क बहन्ने

१६२१. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मातृभाषा दिवस क बहन्ने
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२२. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२३. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२४. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा दिवस

१६२५. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा दिवस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२६. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२७. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२८. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६२९. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३०. खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा दिवस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3963 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती

१६३१. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३२. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३३. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३४. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक संस्कृति

१६३५. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३६. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३७. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३८. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६३९. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४०. खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3964 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: तीन तिरहुतिया तेरह पाक

१६४१. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तीन तिरहुतिया तेरह पाक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४२. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४३. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४४. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक कहावत

१६४५. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक कहावत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४६. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४७. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४८. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६४९. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५०. खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कहावत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3965 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत

१६५१. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५२. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५३. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५४. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक सम्वाद

१६५५. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक सम्वाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५६. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५७. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५८. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६५९. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६०. खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक सम्वाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3966 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: यात्रीक प्रसंग

१६६१. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यात्रीक प्रसंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६२. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६३. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६४. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि आलोचना

१६६५. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६६. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६७. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६८. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६६९. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७०. खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कवि आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3967 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा

१६७१. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७२. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७३. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७४. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा राजनीति

१६७५. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७६. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७७. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७८. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६७९. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८०. खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3968 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: वैश्विक सोच ?

१६८१. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वैश्विक सोच ?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८२. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८३. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८४. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वैश्वीकरण

१६८५. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वैश्वीकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८६. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८७. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८८. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८९. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९०. खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “वैश्वीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3969 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: भाषाक प्रति एक नव सोच

१६९१. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भाषाक प्रति एक नव सोच
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९२. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९३. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९४. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा चिन्तन

१६९५. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९६. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९७. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९८. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९९. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७००. खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3970 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति

१७०१. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०२. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०३. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०४. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा मानकीकरण

१७०५. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा मानकीकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०६. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०७. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०८. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७०९. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१०. खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3971 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई

१७११. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१२. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१३. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१४. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बहुलतावाद

१७१५. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बहुलतावाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१६. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१७. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१८. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७१९. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२०. खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बहुलतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3972 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: 'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर

१७२१. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२२. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२३. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२४. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) क्रॉस-बोर्डर कथा

१७२५. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) क्रॉस-बोर्डर कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२६. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२७. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२८. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७२९. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३०. खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक “'चिड़ै' आ ओकरे लाथें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “क्रॉस-बोर्डर कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3973 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना

१७३१. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३२. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३३. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३४. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आलोचना

१७३५. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३६. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३७. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३८. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७३९. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४०. खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक “'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3974 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली : पंडिताम वा आम?

१७४१. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली : पंडिताम वा आम?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४२. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४३. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४४. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा चेतना

१७४५. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४६. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४७. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४८. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७४९. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५०. खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3975 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: पंडित गोविन्द झा

१७५१. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पंडित गोविन्द झा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५२. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५३. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५४. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यक्तित्व रेखांकन

१७५५. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यक्तित्व रेखांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५६. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५७. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५८. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७५९. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६०. खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3976 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: मैथिली आ अध्ययन

१७६१. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली आ अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६२. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६३. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६४. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा अध्ययन

१७६५. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६६. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६७. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६८. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७६१. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७०. खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3977 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: उजरैत गाम बसैत शहर.....

१७७१. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उजरैत गाम बसैत शहर.....
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७२. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७३. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७४. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण पलायन

१७७५. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण पलायन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७६. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७७. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७८. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७७९. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८०. खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3978 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: विद्यापति समारोह

१७८१. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विद्यापति समारोह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८२. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८३. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८४. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आयोजन

१७८५. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आयोजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८६. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८७. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८८. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८९. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९०. खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3979 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: बिहार गीत आ मैथिल

१७९१. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिहार गीत आ मैथिल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९२. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९३. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९४. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक पहचान

१७९५. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक पहचान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९६. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९७. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९८. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९९. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८००. खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3980 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने

१८०१. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०२. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०३. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०४. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा सेमिनार

१८०५. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा सेमिनार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०६. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०७. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०८. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८०९. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१०. खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “भाषा सेमिनार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3981 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वर: विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

१८११. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१२. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१३. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१४. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अन्तर्भाषिक सम्मान

१८१५. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अन्तर्भाषिक सम्मान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१६. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१७. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१८. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८१९. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२०. खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अन्तर्भाषिक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3982 : विदेह-सदेह 30 — अतुलेश्वरः धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य

१८२१. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२२. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२३. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२४. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुरु-शिष्य परम्परा

१८२५. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२६. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२७. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२८. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८२९. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३०. खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गुरु-शिष्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3983 : विदेह-सदेह 30 — डॉ॰ शशिधर कुमार: पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

१८३१. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी समीक्षा : गामक जिनगी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३२. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३३. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३४. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अकादमिक समीक्षक

१८३५. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ॰ शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अकादमिक समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३६. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ० शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३७. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३८. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८३९. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४०. खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3984 : विदेह-सदेह 30 — डॉ० शशिधर कुमर: पोथी समीक्षा -- अम्बरा

१८४१. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी समीक्षा -- अम्बरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४२. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४३. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४४. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१८४५. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४६. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ० शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४७. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४८. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८४९. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: डॉ० शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५०. खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3985 : विदेह-सदेह 30 — सुमित आनन्द: अक्षरपुरुष-विश्वनाथ

१८५१. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अक्षरपुरुष-विश्वनाथ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५२. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५३. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५४. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यकार व्यक्तित्व

१८५५. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यकार व्यक्तित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५६. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५७. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५८. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८५९. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६०. खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “साहित्यकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3986 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी

१८६१. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६२. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६३. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६४. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी विमर्श समीक्षक

१८६५. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी विमर्श समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६६. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६७. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६८. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८६९. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७०. खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3987 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा

१८७१. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७२. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७३. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७४. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्य

१८७५. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७६. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७७. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७८. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८७९. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८०. खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3988 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा

१८८१. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८२. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८३. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८४. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी अस्मिता

१८८५. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी अस्मिता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८६. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८७. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८८. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८९. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९०. खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3989 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल

१८९१. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९२. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९३. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९४. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

१८९५. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९६. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९७. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९८. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९९. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९००. खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3990 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह

१९०१. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०२. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०३. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०४. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक प्रवृत्ति

१९०५. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक प्रवृत्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०६. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०७. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०८. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९०९. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१०. खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3991 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. योगानन्द झा: इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि

१९११. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१२. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१३. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१४. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वार्षिक सर्वेक्षण

१९१५. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वार्षिक सर्वेक्षण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१६. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१७. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१८. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९१९. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२०. खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “वार्षिक सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3992 : विदेह-सदेह 30 — राजेश्वर नेपाली: कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

१९२१. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२२. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२३. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) श्रद्धाञ्जलि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२४. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि

१९२५. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२६. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२७. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२८. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९२९. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३०. खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3993 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'

१९३१. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३२. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३३. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३४. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध

१९३५. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३६. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३७. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३८. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९३९. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४०. खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3994 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा

१९४१. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४२. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४३. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४४. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रन्थ समीक्षा

१९४५. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रन्थ समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४६. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४७. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४८. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९४९. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५०. खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रन्थ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3995 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म

१९५१. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५२. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५३. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५४. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विश्लेषण

१९५५. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५६. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५७. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५८. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९५९. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६०. खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3996 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य

१९६१. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६२. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६३. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६४. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक परम्परा

१९६५. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६६. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६७. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६८. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९६९. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७०. खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3997 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्

१९७१. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७२. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७३. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७४. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संस्कृत भाषा चिन्तन

१९७५. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संस्कृत भाषा चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७६. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७७. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७८. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९७९. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८०. खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “संस्कृत भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3998 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: ये बान्धवाऽबान्धवा वा

१९८१. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ये बान्धवाऽबान्धवा वा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८२. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८३. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८४. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक सम्बन्ध

१९८५. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८६. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८७. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८८. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८९. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९०. खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3999 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: चहकैत चौक आ कनैत दलान

१९९१. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चहकैत चौक आ कनैत दलान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९२. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९३. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९४. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्राम संस्कृति

१९९५. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्राम संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९६. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९७. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९८. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९९. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०००. खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्राम संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4000 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक

२००१. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००२. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००३. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००४. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक चिन्तन

२००५. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००६. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००७. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००८. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२००९. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१०. खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4001 : विदेह-सदेह 30 — बिपिन झा: स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका

२०११. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१२. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१३. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१४. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक इतिहास

२०१५. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१६. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१७. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१८. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०१९. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२०. खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4002 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमल: साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल

२०२१. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२२. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२३. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२४. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गीत-संगीत समीक्षा

२०२५. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गीत-संगीत समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२६. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२७. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२८. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०२९. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३०. खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य--सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर--ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संगीत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4003 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमलक: 'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

२०३१. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३२. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३३. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहाँ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३४. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति प्रभाव

२०३५. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति प्रभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३६. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३७. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३८. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०३९. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४०. खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4004 : विदेह-सदेह 30 — डा. राजेन्द्र विमलः नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी

२०४१. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४२. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४३. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४४. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा समीक्षा

२०४५. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४६. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४७. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव--नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४८. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०४९. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: डा. राजेन्द्र विमलक “नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५०. खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक “नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4005 : विदेह-सदेह 30 — नीलिमा: मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा

२०५१. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५२. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५३. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पाकविधि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५४. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक खानपान संस्कृति

२०५५. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक खानपान संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५६. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीलिमा, विधा गद्य, उप-विधा पाकविधि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५७. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५८. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पाकविधिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०५९. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६०. खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि गद्य, पाकविधि आ “मिथिलाक खानपान संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4006 : विदेह-सदेह 30 — छवि झा/ कुमुद सिंह: मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता

२०६१. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६२. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६३. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६४. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सौसुर संकेत सिद्धान्त

२०६५. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सौसुर संकेत सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६६. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक छवि झा/ कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६७. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६८. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०६९. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७०. खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “सौसुर संकेत सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4007 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: जानकी-नवमी

२०७१. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जानकी-नवमी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७२. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७३. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७४. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२०७५. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७६. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७७. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७८. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०७९. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८०. खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4008 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: वटसावित्री

२०८१. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वटसावित्री
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८२. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८३. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८४. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२०८५. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८६. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८७. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८८. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०८९. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९०. खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4009 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी

२०९१. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९२. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९३. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९४. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२०९५. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९६. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९७. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९८. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९९. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१००. खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4010 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या

२१०१. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०२. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०३. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०४. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२१०५. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०६. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०७. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०८. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१०९. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: नूतन झाक “कुशोत्पत्तन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११०. खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक “कुशोत्पत्तन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4011 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: दुर्गा पूजा

२१११. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दुर्गा पूजा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११२. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११३. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११४. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२११५. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११६. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११७. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११८. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२११९. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२०. खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4012 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: शरत्पूर्णिमा / कोजगरा

२१२१. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शरत्पूर्णिमा / कोजगरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२२. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२३. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२४. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२१२५. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२६. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२७. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२८. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१२९. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३०. खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक “शरत्पूर्णमा / कोजगरा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4013 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: दीपावली

२१३१. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दीपावली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३२. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३३. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३४. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२१३५. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३६. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३७. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३८. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१३९. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४०. खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4014 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया

२१४१. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४२. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४३. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४४. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२१४५. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४६. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४७. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४८. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया”कँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१४९. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५०. खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4015 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: बाराती-सत्कार

२१५१. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाराती-सत्कार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५२. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५३. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५४. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक संस्कृति

२१५५. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५६. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५७. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५८. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१५९. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६०. खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4016 : विदेह-सदेह 30 — नूतन झा: चौठचन्द्र पूजा

२१६१. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चौठचन्द्र पूजा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६२. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६३. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६४. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक पर्व

२१६५. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक पर्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६६. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६७. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६८. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१६९. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: नूतन झाक “चौठचन्द्र पूजा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७०. खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक “चौचन्द्र पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4017 : विदेह-सदेह 30 — विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी': पंजी प्रबंध

२१७१. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पंजी प्रबंध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७२. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७३. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७४. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पञ्जी परम्परा

२१७५. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पञ्जी परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७६. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी', विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७७. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७८. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१७९. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८०. खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4018 : विदेह-सदेह 30 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना

२१८१. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८२. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८३. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८४. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समकालीन उपन्यास विश्लेषण

२१८५. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समकालीन उपन्यास विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८६. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८७. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८८. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१८९. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९०. खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4019 : विदेह-सदेह 30 — खुशबू झाक: हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी

२१९१. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९२. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९३. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९४. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पाठकीय प्रतिक्रिया

२१९५. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पाठकीय प्रतिक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९६. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९७. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९८. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९९. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२००. खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4020 : विदेह-सदेह 30 — खुशबू झा: मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर

२२०१. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०२. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०३. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०४. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

२२०५. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०६. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०७. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०८. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२०९. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१०. खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4021 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रकिशोर: समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी

२२११. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१२. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१३. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१४. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन

२२१५. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१६. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्द्रकिशोर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१७. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१८. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२१९. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२०. खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4022 : विदेह-सदेह 30 — सुदीप झा: सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'

२२२१. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२२. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२३. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२४. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह आलोचना

२२२५. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह आलोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२६. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुदीप झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२७. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२८. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२२९. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३०. खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4023 : विदेह-सदेह 30 — राजेश कुमार कर्ण: चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै

२२३१. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३२. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३३. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३४. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

२२३५. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३६. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेश कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३७. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३८. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२३९. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर--चिरबिर करैत उडि रहल चिडै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४०. खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर-चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4024 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'

२२४१. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४२. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४३. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४४. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक समीक्षा

२२४५. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४६. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४७. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४८. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२४९. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५०. खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4025 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा

२२५१. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५२. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५३. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५४. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

२२५५. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५६. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५७. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५८. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२५९. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६०. खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4026 : विदेह-सदेह 30 — चन्द्रेश: यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव

२२६१. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६२. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६३. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६४. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक आयोजन

२२६५. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक आयोजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६६. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६७. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६८. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२६९. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७०. खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4027 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण

२२७१. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७२. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७३. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७४. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगमञ्च समीक्षक

२२७५. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगमञ्च समीक्षक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७६. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७७. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७८. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२७९. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८०. खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रंगमञ्च समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4028 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि

२२८१. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८२. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८३. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८४. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाटक समीक्षा

२२८५. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाटक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८६. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८७. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८८. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२८९. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९०. खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4029 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग

२२९१. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९२. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९३. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९४. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगमञ्च प्रयोग

२२९५. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगमञ्च प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९६. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९७. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९८. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९९. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३००. खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4030 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा

२३०१. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०२. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०३. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०४. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

२३०५. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०६. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०७. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०८. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३०९. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१०. खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4031 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: रंगदृष्टि

२३११. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रंगदृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१२. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१३. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१४. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगमञ्च सिद्धान्त

२३१५. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगमञ्च सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१६. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१७. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१८. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३१९. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२०. खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4032 : विदेह-सदेह 30 — प्रकाश झा: मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि

२३२१. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२२. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२३. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२४. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समकालीन रंगकला

२३२५. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समकालीन रंगकला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२६. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२७. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२८. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३२९. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३०. खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन रंगकला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4033 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: मिथिला कवि कोकिल विद्यापति

२३३१. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला कवि कोकिल विद्यापति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३२. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३३. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३४. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषा गति

२३३५. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषा गति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३६. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३७. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३८. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३३९. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४०. खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4034 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा

२३४१. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४२. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४३. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४४. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा सम्बन्ध

२३४५. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४६. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४७. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४८. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३४९. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५०. खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4035 : विदेह-सदेह 30 — गोपाल प्रसाद: सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा

२३५१. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५२. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५३. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५४. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा आ समाज

२३५५. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा आ समाज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५६. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५७. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५८. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३५९. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६०. खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषा आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4036 : विदेह-सदेह 30 — पंचानन मिश्र: मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा

२३६१. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६२. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६३. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६४. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल

२३६५. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६६. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६७. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६८. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३६९. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७०. खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4037 : विदेह-सदेह 30 — पंचानन मिश्र: मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ

२३७१. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७२. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७३. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७४. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) धार्मिक स्थल शोध

२३७५. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) धार्मिक स्थल शोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७६. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७७. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७८. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३७९. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८०. खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “धार्मिक स्थल शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4038 : विदेह-सदेह 30 — भीमनाथ झा: चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ

२३८१. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८२. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८३. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८४. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक इतिहास

२३८५. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८६. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८७. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८८. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३८९. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९०. खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4039 : विदेह-सदेह 30 — भीमनाथ झा: मखान खानि ई मिथिला

२३९१. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मखान खानि ई मिथिला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९२. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९३. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९४. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृषि संस्कृति

२३९५. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृषि संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९६. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९७. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९८. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९९. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४००. खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कृषि संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4040 : विदेह-सदेह 30 — कुमार राधारमण: पाकिस्तान मे सेक्स-विचार

२४०१. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पाकिस्तान मे सेक्स-विचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०२. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०३. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०४. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विमर्श

२४०५. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०६. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार राधारमण, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०७. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०८. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४०९. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१०. खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4041 : विदेह-सदेह 30 — डा. शंकरदेवझा: मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली

२४११. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१२. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१३. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१४. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ऐतिहासिक पुरातत्व

२४१५. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ऐतिहासिक पुरातत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१६. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. शंकरदेवझा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१७. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१८. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली”क विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४१९. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२०. खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “ऐतिहासिक पुरातत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4042 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडल: जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन

२४२१. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२२. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२३. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२४. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्र शैलीक समीक्षा

२४२५. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्र शैलीक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२६. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२७. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२८. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४२९. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३०. खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र शैलीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4043 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडल: जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर

२४३१. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३२. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३३. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३४. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास मूल्यांकन

२४३५. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३६. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३७. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३८. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” के विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४३९. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४०. खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4044 : विदेह-सदेह 30 — राजदेव मंडलक: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

२४४१. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४२. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४३. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४४. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्रोत्तर समीक्षा

२४४५. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्रोत्तर समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४६. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४७. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४८. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४४९. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५०. खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्रोत्तर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4045 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. मेघन प्रसाद: मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास

२४५१. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५२. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५३. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५४. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनुवाद सिद्धान्त

२४५५. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनुवाद सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५६. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५७. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५८. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४५९. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६०. खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4046 : विदेह-सदेह 30 — डॉ. इन्दुधर झा: दू-पत्र: एक विश्लेषण

२४६१. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दू-पत्र: एक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६२. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६३. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६४. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्र साहित्य विश्लेषण

२४६५. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्र साहित्य विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६६. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. इन्दुधर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६७. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६८. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४६९. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७०. खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4047 : विदेह-सदेह 30 — रामलोचन ठाकुर: समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा

२४७१. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७२. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७३. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७४. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समकालीन कथा यथार्थबोध

२४७५. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समकालीन कथा यथार्थबोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७६. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७७. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७८. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४७९. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८०. खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन कथा यथार्थबोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4048 : विदेह-सदेह 30 — केदार कानन: जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि

२४८१. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८२. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८३. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८४. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति विशेष समीक्षा

२४८५. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति विशेष समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८६. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८७. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८८. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४८९. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९०. खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति विशेष समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 4049 : विदेह-सदेह 30 — श्यामसुन्दर शशि: साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव

२४९१. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९२. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९३. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) श्रद्धाञ्जलि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९४. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजल परम्परा

२४९५. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजल परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९६. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९७. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९८. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९९. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५००. खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१. (A) विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज — सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” रूपमे देल अछि।
२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४. (D) गीत-संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-संग्रह समीक्षा” अछि।
५. (A) गीत-संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०. (B) खण्ड 3800, सूचकांक पंक्ति 2491मे गजेन्द्र ठाकुरक “विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११. (A) संतोष कुमार मिश्र- “एना किए..?” — सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संतोष कुमार मिश्र- “एना किए..?”” रूपमे देल अछि।
१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
१५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०. (B) खण्ड 3801, सूचकांक पंक्ति 2492मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- “एना किए..?”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१. (A) संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी — सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” रूपमे देल अछि।
२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४. (D) मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” अछि।
२५. (A) मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०. (B) खण्ड 3802, सूचकांक पंक्ति 2493मे गजेन्द्र ठाकुरक “संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मिथिलाक्षर प्रकाशन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१. (A) लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति — सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” रूपमे देल अछि।
३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३. (C) शोध/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।
३४. (D) लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” अछि।
३५. (A) लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
३६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८. (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०. (B) खण्ड 3803, सूचकांक पंक्ति 2494मे गजेन्द्र ठाकुरक “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोकगाथा सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१. (A) पंजी-प्रबन्ध — सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “पंजी-प्रबन्ध” रूपमे देल अछि।
४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
४४. (D) पञ्जी परम्परा परिचय — टिप्पणीक पहिल संकेत “पञ्जी परम्परा परिचय” अछि।
४५. (A) पञ्जी परम्परा परिचय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पञ्जी परम्परा परिचय” रूपमे देखाइत अछि।
४६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०. (B) खण्ड 3804, सूचकांक पंक्ति 2495मे गजेन्द्र ठाकुरक “पंजी-प्रबन्ध” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पञ्जी परम्परा परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१. (A) मिथिला कला — सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मिथिला कला” रूपमे देल अछि।
५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
५४. (D) मिथिला चित्रकला परिचय — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला चित्रकला परिचय” अछि।
५५. (A) मिथिला चित्रकला परिचय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला चित्रकला परिचय” रूपमे देखाइत अछि।
५६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०. (B) खण्ड 3805, सूचकांक पंक्ति 2496मे गजेन्द्र ठाकुरक “मिथिला कला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिला चित्रकला परिचय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१. (A) विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२) — सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” रूपमे देल अछि।
६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३. (C) जीवनी/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।
६४. (D) विस्मृत साहित्यकारक उद्धार — टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” अछि।
६५. (A) विस्मृत साहित्यकारक उद्धार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” रूपमे देखाइत अछि।
६६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८. (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०. (B) खण्ड 3806, सूचकांक पंक्ति 2497मे गजेन्द्र ठाकुरक “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “विस्मृत साहित्यकारक उद्धार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१. (A) संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग' — सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” रूपमे देल अछि।
७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
७४. (D) संगीत परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “संगीत परम्परा” अछि।
७५. (A) संगीत परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संगीत परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
७६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०. (B) खण्ड 3807, सूचकांक पंक्ति 2498मे गजेन्द्र ठाकुरक “संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा 'रामरंग'” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संगीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१. (A) सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.) — सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” रूपमे देल अछि।
८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३. (C) जीवनी/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।
८४. (D) ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” अछि।
८५. (A) ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” रूपमे देखाइत अछि।
८६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०. (B) खण्ड 3808, सूचकांक पंक्ति 2499मे गजेन्द्र ठाकुरक “सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “ऐतिहासिक व्यक्तित्व शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१. (A) म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य — सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” रूपमे देल अछि।
९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९३. (C) निबन्ध/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/शोध” अछि।
९४. (D) मिथिलाक दार्शनिक परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” अछि।
९५. (A) मिथिलाक दार्शनिक परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
९६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९८. (D) ई पाठ निबन्ध/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१००. (B) खण्ड 3809, सूचकांक पंक्ति 2500मे गजेन्द्र ठाकुरक “म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/शोध आ “मिथिलाक दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१. (A) मैथिली भाषापाक १-३ — सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली भाषापाक १-३” रूपमे देल अछि।
१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०३. (C) भाषाशास्त्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।
१०४. (D) मैथिली भाषा अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा अध्ययन” अछि।
१०५. (A) मैथिली भाषा अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
१०६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८. (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११०. (B) खण्ड 3810, सूचकांक पंक्ति 2501मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली भाषापाक १-३” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१११. (A) की अहाँकें बुझल अछि? — सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “की अहाँकें बुझल अछि?” रूपमे देल अछि।
११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
११४. (D) भाषा चेतना जागरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चेतना जागरण” अछि।
११५. (A) भाषा चेतना जागरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चेतना जागरण” रूपमे देखाइत अछि।
११६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०. (B) खण्ड 3811, सूचकांक पंक्ति 2502मे गजेन्द्र ठाकुरक “की अहाँकेँ बुझल अछि?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१. (A) आध्यात्म — सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक प्रविष्टि “आध्यात्म” रूपमे देल अछि।
१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३. (C) आध्यात्मिक निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आध्यात्मिक निबन्ध” अछि।
१२४. (D) आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” अछि।
१२५. (A) आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, विधा गद्य, उप-विधा आध्यात्मिक निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ आध्यात्मिक निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 3812, सूचकांक पंक्ति 2503मे श्री मैथिली पुत्र प्रदीपक “आध्यात्म” प्रविष्टि गद्य, आध्यात्मिक निबन्ध आ “आध्यात्मिक चिन्तन परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१३४. (D) अनुवाद कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद कृति समीक्षा” अछि।
१३५. (A) अनुवाद कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 3813, सूचकांक पंक्ति 2504मे धनाकर ठाकुरक “प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा० कलामक पोथी आइजीएनआइटीईडी एमआइएनडीएस क डा० नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अनुवाद कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी” समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी” समीक्षा” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१४४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

१४५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१४६. (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५०. (B) खण्ड 3814, सूचकांक पंक्ति 2505मे धनाकर ठाकुरक “जगदीश प्रसाद मंडलक “गामक जिनगी” समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५१. (A) फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक प्रविष्टि “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” रूपमे देल अछि।

१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१५४. (D) बाल साहित्य समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य समीक्षा” अछि।

१५५. (A) बाल साहित्य समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१५६. (B) लेखक धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६०. (B) खण्ड 3815, सूचकांक पंक्ति 2506मे धनाकर ठाकुरक “फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस') समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “बाल साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६१. (A) बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा — सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” रूपमे देल अछि।

१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

१६४. (D) बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” अछि।

१६५. (A) बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।

१६६. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७०. (B) खण्ड 3816, सूचकांक पंक्ति 2507मे मुन्ना जीक “बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य आ गजल विधाक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७१. (A) विहनि कथा संसार — सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “विहनि कथा संसार” रूपमे देल अछि।
१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३. (C) समीक्षा/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलोचना” अछि।
१७४. (D) कथा साहित्य समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा साहित्य समीक्षा” अछि।
१७५. (A) कथा साहित्य समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा साहित्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 3817, सूचकांक पंक्ति 2508मे मुन्ना जीक “विहनि कथा संसार” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कथा साहित्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ “क्षणिका” — सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ “क्षणिका”” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८४. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
१८५. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 3818, सूचकांक पंक्ति 2509मे मुन्ना जीक “अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ “क्षणिका”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि! — सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१९४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
१९५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१९६. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२००. (B) खण्ड 3819, सूचकांक पंक्ति 2510मे मुन्ना जीक “अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि!” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०१. (A) फोंका-एक विहगावलोकन — सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक प्रविष्टि “फोंका-एक विहगावलोकन” रूपमे देल अछि।
२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०३. (C) समीक्षा/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/आलोचना” अछि।
२०४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
२०५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२०६. (B) लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०८. (D) ई पाठ समीक्षा/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१०. (B) खण्ड 3820, सूचकांक पंक्ति 2511मे डा. रमण झाक “फोंका-एक विहगावलोकन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/आलोचना आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२११. (A) मैथिली चित्रकथा — सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक प्रविष्टि “मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।
२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
२१४. (D) चित्रकथा विधाक अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा विधाक अध्ययन” अछि।
२१५. (A) चित्रकथा विधाक अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा विधाक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
२१६. (B) लेखक डा. रमण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२०. (B) खण्ड 3821, सूचकांक पंक्ति 2512मे डा. रमण झाक “मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “चित्रकथा विधाक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२१. (A) उत्तराधिकारी आ लेखक — सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक प्रविष्टि “उत्तराधिकारी आ लेखक” रूपमे देल अछि।
२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२२४. (D) लेखकीय दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखकीय दृष्टि” अछि।
२२५. (A) लेखकीय दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लेखकीय दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
२२६. (B) लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३०. (B) खण्ड 3822, सूचकांक पंक्ति 2513मे जीवकान्तक “उत्तराधिकारी आ लेखक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लेखकीय दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३१. (A) जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर — सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” रूपमे देल अछि।
२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२३४. (D) उपन्यास समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।
२३५. (A) उपन्यास समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२३६. (B) लेखक जीवकान्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४०. (B) खण्ड 3823, सूचकांक पंक्ति 2514मे जीवकान्तक “जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४१. (A) कारी घटा बरसैत मेघ — सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक प्रविष्टि “कारी घटा बरसैत मेघ” रूपमे देल अछि।
२४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४३. (C) निबन्ध/कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/कथा” अछि।
२४४. (D) प्रकृति आ भावनात्मक गद्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” अछि।
२४५. (A) प्रकृति आ भावनात्मक गद्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।
२४६. (B) लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४८. (D) ई पाठ निबन्ध/कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५०. (B) खण्ड 3824, सूचकांक पंक्ति 2515मे डॉ. राजीव कुमार वर्माक “कारी घटा बरसैत मेघ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/कथा आ “प्रकृति आ भावनात्मक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५१. (A) मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता — सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” रूपमे देल अछि।
२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२५४. (D) साहित्यिक आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आलोचना” अछि।
२५५. (A) साहित्यिक आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
२५६. (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६०. (B) खण्ड 3825, सूचकांक पंक्ति 2516मे मानेश्वर मनुजक “मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६१. (A) मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू — सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक प्रविष्टि “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” रूपमे देल अछि।
२६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६३. (C) पत्र/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र/निबन्ध” अछि।
२६४. (D) सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” अछि।
२६५. (A) सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
२६६. (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६८. (D) ई पाठ पत्र/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७०. (B) खण्ड 3826, सूचकांक पंक्ति 2517मे मानेश्वर मनुजक “मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू” प्रविष्टि गद्य, पत्र/निबन्ध आ “सामाजिक आ सांस्कृतिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७१. (A) भोथ हथियार — सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “भोथ हथियार” रूपमे देल अछि।
२७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२७४. (D) गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” अछि।
२७५. (A) गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” रूपमे देखाइत अछि।
२७६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८०. (B) खण्ड 3827, सूचकांक पंक्ति 2518मे ओम प्रकाश झाक “भोथ हथियार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गजल आ बाल साहित्यक सिद्धान्तकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८१. (A) मैथिली बाल गजलक अवधारणा — सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” रूपमे देल अछि।
२८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८३. (C) आलोचना/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/निबन्ध” अछि।
२८४. (D) बाल गजल सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल सिद्धान्त” अछि।
२८५. (A) बाल गजल सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

२८६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८८. (D) ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९०. (B) खण्ड 3828, सूचकांक पंक्ति 2519मे ओम प्रकाश झाक “मैथिली बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९१. (A) बहुरूपिया रचना मे — सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बहुरूपिया रचना मे” रूपमे देल अछि।
२९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२९४. (D) रचना प्रक्रिया विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “रचना प्रक्रिया विमर्श” अछि।
२९५. (A) रचना प्रक्रिया विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रचना प्रक्रिया विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
२९६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३००. (B) खण्ड 3829, सूचकांक पंक्ति 2520मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचना मे” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रिया विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०१. (A) घोघ उठबैत गजल — सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “घोघ उठबैत गजल” रूपमे देल अछि।
३०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
३०४. (D) गजल आन्दोलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आन्दोलन” अछि।
३०५. (A) गजल आन्दोलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।
३०६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१०. (B) खण्ड 3830, सूचकांक पंक्ति 2521मे ओम प्रकाश झाक “घोघ उठबैत गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३११. (A) समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल — सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक प्रविष्टि “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।
३१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३१४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
३१५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

३१६. (B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२०. (B) खण्ड 3831, सूचकांक पंक्ति 2522मे डॉ. बचेश्वर झाक “समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२१. (A) मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान — सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” रूपमे देल अछि।
३२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
३२४. (D) नाटक इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक इतिहास” अछि।
३२५. (A) नाटक इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
३२६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३०. (B) खण्ड 3832, सूचकांक पंक्ति 2523मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “नाटक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३१. (A) मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
३३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३३४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
३३५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३३६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४०. (B) खण्ड 3833, सूचकांक पंक्ति 2524मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४१. (A) भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” रूपमे देल अछि।
३४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३४४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
३४५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३४६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५०. (B) खण्ड 3834, सूचकांक पंक्ति 2525मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५१. (A) समीक्षा (अर्चिस) — सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा (अर्चिस)” रूपमे देल अछि।
३५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३५४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
३५५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३५६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६०. (B) खण्ड 3835, सूचकांक पंक्ति 2526मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा (अर्चिस)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६१. (A) यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस — सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” रूपमे देल अछि।
३६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
३६४. (D) शिक्षा निबन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा निबन्ध” अछि।
३६५. (A) शिक्षा निबन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा निबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
३६६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७०. (B) खण्ड 3836, सूचकांक पंक्ति 2527मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “शिक्षा निबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७१. (A) समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक) — सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” रूपमे देल अछि।
३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३७४. (D) नाटक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।
३७५. (A) नाटक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३७६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८०. (B) खण्ड 3837, सूचकांक पंक्ति 2528मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८१. (A) समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा — सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” रूपमे देल अछि।
३८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३८४. (D) नाटक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।
३८५. (A) नाटक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३८६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९०. (B) खण्ड 3838, सूचकांक पंक्ति 2529मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९१. (A) किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
३९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३९४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
३९५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३९६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४००. (B) खण्ड 3839, सूचकांक पंक्ति 2530मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “किस्त-किस्त जीवन-शोफालिका वर्मा-(समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०१. (A) मैथिली उपन्यास साहित्यिक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान — सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यिक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” रूपमे देल अछि।
४०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
४०४. (D) उपन्यास साहित्य इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास साहित्य इतिहास” अछि।
४०५. (A) उपन्यास साहित्य इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
४०६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१०. (B) खण्ड 3840, सूचकांक पंक्ति 2531मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यिक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “उपन्यास साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४११. (A) पृथ्वीपुत्र — सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पृथ्वीपुत्र” रूपमे देल अछि।
४१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४१४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
४१५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४१६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२०. (B) खण्ड 3841, सूचकांक पंक्ति 2532मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पृथ्वीपुत्र” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२१. (A) मैथिली कथा साहित्यिक विकासमे राजकमलक योगदान — सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली कथा साहित्यिक विकासमे राजकमलक योगदान” रूपमे देल अछि।
४२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
४२४. (D) कथा साहित्य इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा साहित्य इतिहास” अछि।
४२५. (A) कथा साहित्य इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
४२६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३०. (B) खण्ड 3842, सूचकांक पंक्ति 2533मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “कथा साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३१. (A) कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात — सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” रूपमे देल अछि।
४३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४३४. (D) कथाकाव्य समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकाव्य समीक्षा” अछि।
४३५. (A) कथाकाव्य समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकाव्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४३६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४०. (B) खण्ड 3843, सूचकांक पंक्ति 2534मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकाव्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४१. (A) क्षणप्रभा — सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “क्षणप्रभा” रूपमे देल अछि।
४४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४४४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
४४५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४४६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५०. (B) खण्ड 3844, सूचकांक पंक्ति 2535मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “क्षणप्रभा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५१. (A) बहिरा नाचए अपने ताल — सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “बहिरा नाचए अपने ताल” रूपमे देल अछि।
४५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४५४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
४५५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

४५६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६०. (B) खण्ड 3845, सूचकांक पंक्ति 2536मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “बहिरा नाचए अपने ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६१. (A) मिथिलाक लोक देवता — सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मिथिलाक लोक देवता” रूपमे देल अछि।
४६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६३. (C) शोध/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।
४६४. (D) लोक संस्कृति अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति अध्ययन” अछि।
४६५. (A) लोक संस्कृति अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
४६६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६८. (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७०. (B) खण्ड 3846, सूचकांक पंक्ति 2537मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मिथिलाक लोक देवता” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “लोक संस्कृति अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७१. (A) इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श — सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” रूपमे देल अछि।
४७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४७४. (D) सामाजिक विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विमर्श” अछि।
४७५. (A) सामाजिक विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
४७६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८०. (B) खण्ड 3847, सूचकांक पंक्ति 2538मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८१. (A) कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श — सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” रूपमे देल अछि।
४८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

४८४. (D) नारी विमर्श समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श समीक्षा” अछि।
४८५. (A) नारी विमर्श समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४८६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९०. (B) खण्ड 3848, सूचकांक पंक्ति 2539मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९१. (A) आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि — सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” रूपमे देल अछि।
४९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४९४. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
४९५. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४९६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५००. (B) खण्ड 3849, सूचकांक पंक्ति 2540मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०१. (A) निश्तुकी — सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “निश्तुकी” रूपमे देल अछि।
५०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५०४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
५०५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५०६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१०. (B) खण्ड 3850, सूचकांक पंक्ति 2541मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “निश्तुकी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५११. (A) समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल) — सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” रूपमे देल अछि।

५१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५१४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
५१५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५१६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२०. (B) खण्ड 3851, सूचकांक पंक्ति 2542मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२१. (A) मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन) — सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” रूपमे देल अछि।
५२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५२४. (D) कविता संकलन समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संकलन समीक्षा” अछि।
५२५. (A) कविता संकलन समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संकलन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५२६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३०. (B) खण्ड 3852, सूचकांक पंक्ति 2543मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३१. (A) कुरुक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “कुरुक्षेत्रम् अर्न्तमनक- (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
५३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५३४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
५३५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५३६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४०. (B) खण्ड 3853, सूचकांक पंक्ति 2544मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मानक- (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४१. (A) समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा — सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” रूपमे देल अछि।
५४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५४४. (D) चित्रकथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “चित्रकथा समीक्षा” अछि।
५४५. (A) चित्रकथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चित्रकथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५४६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५०. (B) खण्ड 3854, सूचकांक पंक्ति 2545मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “चित्रकथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५१. (A) समीक्षा- तरेगन — सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- तरेगन” रूपमे देल अछि।
५५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५५४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
५५५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५५६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६०. (B) खण्ड 3855, सूचकांक पंक्ति 2546मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- तरेगन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६१. (A) समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल) — सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” रूपमे देल अछि।
५६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५६४. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
५६५. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५६६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७०. (B) खण्ड 3856, सूचकांक पंक्ति 2547मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७१. (A) मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान — सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” रूपमे देल अछि।
५७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
५७४. (D) बाल साहित्य इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य इतिहास” अछि।
५७५. (A) बाल साहित्य इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
५७६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८०. (B) खण्ड 3857, सूचकांक पंक्ति 2548मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “बाल साहित्य इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८१. (A) मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण — सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” रूपमे देल अछि।
५८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
५८४. (D) दलित विमर्श समालोचक — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित विमर्श समालोचक” अछि।
५८५. (A) दलित विमर्श समालोचक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित विमर्श समालोचक” रूपमे देखाइत अछि।
५८६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९०. (B) खण्ड 3858, सूचकांक पंक्ति 2549मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “दलित विमर्श समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९१. (A) पोथी- समीक्षा-भावांजलि — सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” रूपमे देल अछि।
५९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५९४. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
५९५. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

५९६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६००. (B) खण्ड 3859, सूचकांक पंक्ति 2550मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “पोथी- समीक्षा-भावांजलि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०१. (A) रमाजीक काव्य यात्रा — सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “रमाजीक काव्य यात्रा” रूपमे देल अछि।
६०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६०४. (D) काव्य यात्रा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “काव्य यात्रा समीक्षा” अछि।
६०५. (A) काव्य यात्रा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काव्य यात्रा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
६०६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६१०. (B) खण्ड 3860, सूचकांक पंक्ति 2551मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “रमाजीक काव्य यात्रा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “काव्य यात्रा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६११. (A) समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन) — सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” रूपमे देल अछि।
६१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६१४. (D) कविता संकलन समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संकलन समीक्षा” अछि।
६१५. (A) कविता संकलन समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संकलन समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
६१६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२०. (B) खण्ड 3861, सूचकांक पंक्ति 2552मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संकलन समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६२१. (A) समीक्षा- बिन वाती दीप जरय — सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” रूपमे देल अछि।
६२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६२४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

६२५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
६२६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३०. (B) खण्ड 3862, सूचकांक पंक्ति 2553मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “समीक्षा- बिन वाती दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३१. (A) गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” रूपमे देल अछि।
६३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६३४. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।
६३५. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
६३६. (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४०. (B) खण्ड 3863, सूचकांक पंक्ति 2554मे रमाकान्त राय 'रमा'क “गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४१. (A) मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु — सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” रूपमे देल अछि।
६४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४३. (C) निबन्ध/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/समीक्षा” अछि।
६४४. (D) मैथिली पत्रकारिता इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” अछि।
६४५. (A) मैथिली पत्रकारिता इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
६४६. (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४८. (D) ई पाठ निबन्ध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५०. (B) खण्ड 3864, सूचकांक पंक्ति 2555मे रमाकान्त राय 'रमा'क “मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/समीक्षा आ “मैथिली पत्रकारिता इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५१. (A) नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी — सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” रूपमे देल अछि।

६५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६५३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

६५४. (D) कवि व्यक्तित्व आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि व्यक्तित्व आलोचना” अछि।

६५५. (A) कवि व्यक्तित्व आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि व्यक्तित्व आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।

६५६. (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६५८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६६०. (B) खण्ड 3865, सूचकांक पंक्ति 2556मे रमाकान्त राय 'रमा'क “नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कवि व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६१. (A) पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास — सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क प्रविष्टि “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” रूपमे देल अछि।

६६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

६६४. (D) उपन्यास समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

६६५. (A) उपन्यास समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

६६६. (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६७०. (B) खण्ड 3866, सूचकांक पंक्ति 2557मे रमाकान्त राय 'रमा'क “पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६७१. (A) लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व — सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रूपमे देल अछि।

६७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६७३. (C) निबन्ध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/आलोचना” अछि।

६७४. (D) लघुकथा शिल्प — टिप्पणीक पहिल संकेत “लघुकथा शिल्प” अछि।

६७५. (A) लघुकथा शिल्प — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघुकथा शिल्प” रूपमे देखाइत अछि।

६७६. (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६७८. (D) ई पाठ निबन्ध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६८०. (B) खण्ड 3867, सूचकांक पंक्ति 2558मे देवशंकर नवीनक “लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/आलोचना आ “लघुकथा शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अछि।

६८१. (A) अददी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता — सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “अददी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” रूपमे देल अछि।

६८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

६८४. (D) साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” अछि।

६८५. (A) साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” रूपमे देखाइत अछि।

६८६. (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९०. (B) खण्ड 3868, सूचकांक पंक्ति 2559मे देवशंकर नवीनक “अददी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक पुरातत्ववेत्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६९१. (A) बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास) — सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक प्रविष्टि “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” रूपमे देल अछि।

६९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६९३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

६९४. (D) उपन्यास समालोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समालोचना” अछि।

६९५. (A) उपन्यास समालोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समालोचना” रूपमे देखाइत अछि।

६९६. (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६९८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७००. (B) खण्ड 3869, सूचकांक पंक्ति 2560मे देवशंकर नवीनक “बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ों- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७०१. (A) कतऽ जा रहल छी हम! — सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक प्रविष्टि “कतऽ जा रहल छी हम!” रूपमे देल अछि।

७०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

७०४. (D) आत्मचिन्तनपरक गद्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मचिन्तनपरक गद्य” अछि।

७०५. (A) आत्मचिन्तनपरक गद्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मचिन्तनपरक गद्य” रूपमे देखाइत अछि।

७०६. (B) लेखक मुन्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७१०. (B) खण्ड 3870, सूचकांक पंक्ति 2561मे मुन्नी कामतक “कतऽ जा रहल छी हम!” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मचिन्तनपरक गद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७११. (A) करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह — सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” रूपमे देल अछि।
७१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
७१४. (D) प्रेरक जीवनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरक जीवनी” अछि।
७१५. (A) प्रेरक जीवनी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।
७१६. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७१८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२०. (B) खण्ड 3871, सूचकांक पंक्ति 2562मे जगदानन्द झा 'मनु'क “करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७२१. (A) संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ — सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” रूपमे देल अछि।
७२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
७२४. (D) प्रेरक जीवनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरक जीवनी” अछि।
७२५. (A) प्रेरक जीवनी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।
७२६. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३०. (B) खण्ड 3872, सूचकांक पंक्ति 2563मे जगदानन्द झा 'मनु'क “संकल्पक धनी विल्मा रुडॉल्फ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “प्रेरक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३१. (A) बाल गजलक अवधारणा — सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “बाल गजलक अवधारणा” रूपमे देल अछि।
७३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
७३४. (D) बाल साहित्य चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य चिन्तन” अछि।
७३५. (A) बाल साहित्य चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
७३६. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४०. (B) खण्ड 3873, सूचकांक पंक्ति 2564मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाल गजलक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४१. (A) मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल — सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” रूपमे देल अछि।
७४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
७४४. (D) बाल साहित्य समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य समीक्षक” अछि।
७४५. (A) बाल साहित्य समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।
७४६. (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७५०. (B) खण्ड 3874, सूचकांक पंक्ति 2565मे चंदन कुमार झाक “मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५१. (A) मिथिला-मैथिली आंदोलन — सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक प्रविष्टि “मिथिला-मैथिली आंदोलन” रूपमे देल अछि।
७५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
७५४. (D) सामाजिक आन्दोलन समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” अछि।
७५५. (A) सामाजिक आन्दोलन समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।
७५६. (B) लेखक चंदन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६०. (B) खण्ड 3875, सूचकांक पंक्ति 2566मे चंदन कुमार झाक “मिथिला-मैथिली आंदोलन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक आन्दोलन समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६१. (A) मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य — सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” रूपमे देल अछि।
७६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
७६४. (D) युवा साहित्य विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा साहित्य विश्लेषण” अछि।
७६५. (A) युवा साहित्य विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
७६६. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७०. (B) खण्ड 3876, सूचकांक पंक्ति 2567मे उमेश मण्डलक “मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्तन आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “युवा साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७१. (A) यात्रीक कवितामे गाम — सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक प्रविष्टि “यात्रीक कवितामे गाम” रूपमे देल अछि।
७७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७७३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
७७४. (D) कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” अछि।
७७५. (A) कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
७७६. (B) लेखक श्री राज, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८०. (B) खण्ड 3877, सूचकांक पंक्ति 2568मे श्री राजक “यात्रीक कवितामे गाम” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “कविता आ ग्राम-चेतना विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७८१. (A) बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।
७८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७८३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
७८४. (D) बाल गजल विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल विमर्श” अछि।
७८५. (A) बाल गजल विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
७८६. (B) लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९०. (B) खण्ड 3878, सूचकांक पंक्ति 2569मे मिहिर झाक “बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल गजल विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७९१. (A) बाल गजल: कोमल करेजक आखर — सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” रूपमे देल अछि।
७९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
७९४. (D) बाल साहित्य विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य विश्लेषण” अछि।
७९५. (A) बाल साहित्य विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
७९६. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७९८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८००. (B) खण्ड 3879, सूचकांक पंक्ति 2570मे अमित मिश्रक “बाल गजल: कोमल करेजक आखर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “बाल साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८०१. (A) कतिआएल आखर — सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “कतिआएल आखर” रूपमे देल अछि।
८०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
८०४. (D) भाषा शैली विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा शैली विश्लेषण” अछि।
८०५. (A) भाषा शैली विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा शैली विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
८०६. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८१०. (B) खण्ड 3880, सूचकांक पंक्ति 2571मे अमित मिश्रक “कतिआएल आखर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा शैली विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८११. (A) आधुनिकताक समस्या (आलोचना) — सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” रूपमे देल अछि।
८१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
८१४. (D) गजल आन्दोलनक प्रणेता — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल आन्दोलनक प्रणेता” अछि।
८१५. (A) गजल आन्दोलनक प्रणेता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल आन्दोलनक प्रणेता” रूपमे देखाइत अछि।
८१६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२०. (B) खण्ड 3881, सूचकांक पंक्ति 2572मे आशीष अनचिन्हारक “आधुनिकताक समस्या (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल आन्दोलनक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२१. (A) गजलक साक्ष्य- समालोचना — सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गजलक साक्ष्य- समालोचना” रूपमे देल अछि।
८२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२३. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
८२४. (D) गजल शिल्प आलोचक — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प आलोचक” अछि।
८२५. (A) गजल शिल्प आलोचक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प आलोचक” रूपमे देखाइत अछि।

८२६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२८. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३०. (B) खण्ड 3882, सूचकांक पंक्ति 2573मे आशीष अनचिन्हारक “गजलक साक्ष्य- समालोचना” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “गजल शिल्प आलोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३१. (A) की थिक बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “की थिक बाल गजल” रूपमे देल अछि।
८३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
८३४. (D) बाल गजल सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल गजल सिद्धान्त” अछि।
८३५. (A) बाल गजल सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल गजल सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।
८३६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४०. (B) खण्ड 3883, सूचकांक पंक्ति 2574मे आशीष अनचिन्हारक “की थिक बाल गजल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल गजल सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४१. (A) अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि — सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” रूपमे देल अछि।
८४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
८४४. (D) सामाजिक चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्तन” अछि।
८४५. (A) सामाजिक चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
८४६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५०. (B) खण्ड 3884, सूचकांक पंक्ति 2575मे आशीष अनचिन्हारक “अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५१. (A) बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान — सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” रूपमे देल अछि।
८५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८५३. (C) नाटक समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समीक्षा” अछि।

८५४. (D) नाट्य समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य समीक्षा” अछि।
८५५. (A) नाट्य समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८५६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८५८. (D) ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६०. (B) खण्ड 3885, सूचकांक पंक्ति 2576मे आशीष अनचिन्हारक “बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “नाट्य समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६१. (A) काफिया, काफिया आ बहर — सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “काफिया, काफिया आ बहर” रूपमे देल अछि।
८६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६३. (C) शोध/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।
८६४. (D) गजल शिल्प गहन अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प गहन अध्ययन” अछि।
८६५. (A) गजल शिल्प गहन अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प गहन अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
८६६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६८. (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७०. (B) खण्ड 3886, सूचकांक पंक्ति 2577मे आशीष अनचिन्हारक “काफिया, काफिया आ बहर” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “गजल शिल्प गहन अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७१. (A) विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति — सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक प्रविष्टि “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” रूपमे देल अछि।
८७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
८७४. (D) लोक संस्कृति चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति चिन्तन” अछि।
८७५. (A) लोक संस्कृति चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
८७६. (B) लेखक बलराम साहु, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८०. (B) खण्ड 3887, सूचकांक पंक्ति 2578मे बलराम साहुक “विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८१. (A) मैथिली महिला आ जिद्दी — सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुधन प्रसाद साहुक प्रविष्टि “मैथिली महिला आ जिद्दी” रूपमे देल अछि।
८८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
८८४. (D) नारी विमर्श आ कथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” अछि।
८८५. (A) नारी विमर्श आ कथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८८६. (B) लेखक शत्रुधन प्रसाद साह, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९०. (B) खण्ड 3888, सूचकांक पंक्ति 2579मे शत्रुधन प्रसाद साहक “मैथिली महिला आ जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श आ कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९१. (A) सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक — सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक प्रविष्टि “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” रूपमे देल अछि।
८९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
८९४. (D) कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” अछि।
८९५. (A) कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
८९६. (B) लेखक विजय मस्त, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९००. (B) खण्ड 3889, सूचकांक पंक्ति 2580मे विजय मस्तक “सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथाकार सुजीतक कृति मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९०१. (A) महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी' — सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक प्रविष्टि “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” रूपमे देल अछि।
९०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
९०४. (D) नारी साहित्य समालोचक — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी साहित्य समालोचक” अछि।
९०५. (A) नारी साहित्य समालोचक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी साहित्य समालोचक” रूपमे देखाइत अछि।
९०६. (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९१०. (B) खण्ड 3890, सूचकांक पंक्ति 2581मे कैलास दासक “महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी साहित्य समालोचक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) 'अंगना सुखल घरमे पानि' — सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक प्रविष्टि “'अंगना सुखल घरमे पानि'” रूपमे देल अछि।
११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
११४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
११५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
११६. (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०. (B) खण्ड 3891, सूचकांक पंक्ति 2582मे कैलास दासक “'अंगना सुखल घरमे पानि'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१. (A) खोजय पड़त मातृत्व बालगीत — सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक प्रविष्टि “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” रूपमे देल अछि।
१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१२४. (D) बाल साहित्य खोज — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य खोज” अछि।
१२५. (A) बाल साहित्य खोज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य खोज” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 3892, सूचकांक पंक्ति 2583मे कैलास दासक “खोजय पड़त मातृत्व बालगीत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) म्याराथन दौड़ आ जनकपुर — सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक प्रविष्टि “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३४. (D) सामाजिक सरोकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सरोकार” अछि।
१३५. (A) सामाजिक सरोकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सरोकार” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक कैलास दास, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 3893, सूचकांक पंक्ति 2584मे कैलास दासक “म्याराथन दौड़ आ जनकपुर” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) पंचदेवोपासक भूमि मिथिला — सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”क प्रविष्टि “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” रूपमे देल अछि।

१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) शोध-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-निबन्ध” अछि।
१४४. (D) मिथिलाक पवित्र भूगोल — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पवित्र भूगोल” अछि।
१४५. (A) मिथिलाक पवित्र भूगोल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पवित्र भूगोल” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”, विधा गद्य, उप-विधा शोध-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ शोध-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 3894, सूचकांक पंक्ति 2585मे डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”क “पंचदेवोपासक भूमि मिथिला” प्रविष्टि गद्य, शोध-निबन्ध आ “मिथिलाक पवित्र भूगोल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास — सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१५४. (D) मैथिली प्रविधि — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली प्रविधि” अछि।
१५५. (A) मैथिली प्रविधि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली प्रविधि” रूपमे देखाइत अछि।
१५६. (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०. (B) खण्ड 3895, सूचकांक पंक्ति 2586मे मनोज मुक्तिक “त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली प्रविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१. (A) मकर संक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत — सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “मकर संक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” रूपमे देल अछि।
१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६४. (D) लोक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।
१६५. (A) लोक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
१६६. (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७०. (B) खण्ड 3896, सूचकांक पंक्ति 2587मे मनोज मुक्तिक “मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७१. (A) जितिया पावनि — सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “जितिया पावनि” रूपमे देल अछि।
१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७४. (D) लोक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।
१७५. (A) लोक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 3897, सूचकांक पंक्ति 2588मे मनोज मुक्तिक “जितिया पावनि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद) — सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक प्रविष्टि “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
१८४. (D) सांस्कृतिक पत्रकारिता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पत्रकारिता” अछि।
१८५. (A) सांस्कृतिक पत्रकारिता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक मनोज मुक्ति, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 3898, सूचकांक पंक्ति 2589मे मनोज मुक्तिक “मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) शब्द विभक्ति सम्वाद — सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “शब्द विभक्ति सम्वाद” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१९४. (D) साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” अछि।
१९५. (A) साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
१९६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०००. (B) खण्ड 3899, सूचकांक पंक्ति 2590मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “शब्द विभक्ति सम्वाद” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक आन्दोलन-इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१००१. (A) अनुवाद — सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “अनुवाद” रूपमे देल अछि।
१००२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१००३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१००४. (D) अनुवाद चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद चिन्तन” अछि।
१००५. (A) अनुवाद चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
१००६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१००७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१००८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१००९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०१०. (B) खण्ड 3900, सूचकांक पंक्ति 2591मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “अनुवाद” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अनुवाद चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०११. (A) कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी — सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” रूपमे देल अछि।
१०१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०१३. (C) इतिहास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास” अछि।
१०१४. (D) मैथिली शिक्षा इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली शिक्षा इतिहास” अछि।
१०१५. (A) मैथिली शिक्षा इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली शिक्षा इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
१०१६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०१८. (D) ई पाठ इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०२०. (B) खण्ड 3901, सूचकांक पंक्ति 2592मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी” प्रविष्टि गद्य, इतिहास आ “मैथिली शिक्षा इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०२१. (A) सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे — सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” रूपमे देल अछि।
१०२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२३. (C) इतिहास/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास/निबन्ध” अछि।
१०२४. (D) विदेह आर्काइव — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह आर्काइव” अछि।
१०२५. (A) विदेह आर्काइव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह आर्काइव” रूपमे देखाइत अछि।
१०२६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०२८. (D) ई पाठ इतिहास/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०३०. (B) खण्ड 3902, सूचकांक पंक्ति 2593मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/निबन्ध आ “विदेह आर्काइव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०३१. (A) मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री — सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” रूपमे देल अछि।
१०३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०३३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१०३४. (D) दलित लोकगाथा शोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित लोकगाथा शोध” अछि।
१०३५. (A) दलित लोकगाथा शोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित लोकगाथा शोध” रूपमे देखाइत अछि।
१०३६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०३८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४०. (B) खण्ड 3903, सूचकांक पंक्ति 2594मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दलित लोकगाथा शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०४१. (A) सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा — सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रविष्टि “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” रूपमे देल अछि।
१०४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०४३. (C) अनुवाद — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।
१०४४. (D) मानवाधिकार अनुवाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवाधिकार अनुवाद” अछि।
१०४५. (A) मानवाधिकार अनुवाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवाधिकार अनुवाद” रूपमे देखाइत अछि।
१०४६. (B) लेखक डा.रमानन्द झा 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०४८. (D) ई पाठ अनुवादक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०५०. (B) खण्ड 3904, सूचकांक पंक्ति 2595मे डा.रमानन्द झा 'रमण'क “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद आ “मानवाधिकार अनुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५१. (A) लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत — सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक प्रविष्टि “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” रूपमे देल अछि।
१०५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०५३. (C) शोध/संकलन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/संकलन” अछि।
१०५४. (D) लोकगीत संरक्षण — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीत संरक्षण” अछि।
१०५५. (A) लोकगीत संरक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीत संरक्षण” रूपमे देखाइत अछि।

१०५६. (B) लेखक हृदय नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध/संकलन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०५८. (D) ई पाठ शोध/संकलनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०६०. (B) खण्ड 3905, सूचकांक पंक्ति 2596मे हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” प्रविष्टि गद्य, शोध/संकलन आ “लोकगीत संरक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०६१. (A) मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र — सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” रूपमे देल अछि।
१०६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०६३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
१०६४. (D) राजनीतिक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक कथा” अछि।
१०६५. (A) राजनीतिक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।
१०६६. (B) लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०६८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०७०. (B) खण्ड 3906, सूचकांक पंक्ति 2597मे कृपानन्द झाक “मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “राजनीतिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०७१. (A) चौकपर आणविक समझौता — सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक प्रविष्टि “चौकपर आणविक समझौता” रूपमे देल अछि।
१०७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०७३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१०७४. (D) परमाणु राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “परमाणु राजनीति” अछि।
१०७५. (A) परमाणु राजनीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परमाणु राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।
१०७६. (B) लेखक कृपानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०८०. (B) खण्ड 3907, सूचकांक पंक्ति 2598मे कृपानन्द झाक “चौकपर आणविक समझौता” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परमाणु राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०८१. (A) मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व — सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” रूपमे देल अछि।
१०८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०८३. (C) नाटक/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक/आलोचना” अछि।
१०८४. (D) मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” अछि।
१०८५. (A) मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” रूपमे देखाइत अछि।

१०८६. (B) लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा नाटक/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८८. (D) ई पाठ नाटक/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९०. (B) खण्ड 3908, सूचकांक पंक्ति 2599मे महेन्द्र मलंगियाक “मूर्दा: शृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व” प्रविष्टि गद्य, नाटक/आलोचना आ “मैथिली रंगमञ्च पुनर्जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०९१. (A) प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन — सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक प्रविष्टि “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” रूपमे देल अछि।
१०९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०९३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
१०९४. (D) रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना” अछि।
१०९५. (A) रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
१०९६. (B) लेखक महेन्द्र मलंगिया, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०९८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११००. (B) खण्ड 3909, सूचकांक पंक्ति 2600मे महेन्द्र मलंगियाक “प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगकर्म व्यक्तित्व आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११०१. (A) मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना — सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” रूपमे देल अछि।
११०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११०३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
११०४. (D) गजल शिल्प विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल शिल्प विश्लेषण” अछि।
११०५. (A) गजल शिल्प विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल शिल्प विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
११०६. (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११०८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१११०. (B) खण्ड 3910, सूचकांक पंक्ति 2601मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “गजल शिल्प विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११११. (A) नव भोर जोहैत मिथिला — सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “नव भोर जोहैत मिथिला” रूपमे देल अछि।
१११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१११३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१११४. (D) सांस्कृतिक अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक अध्ययन” अछि।
१११५. (A) सांस्कृतिक अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
१११६. (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१११८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११२०. (B) खण्ड 3911, सूचकांक पंक्ति 2602मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “नव भोर जोहैत मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११२१. (A) मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून — सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक प्रविष्टि “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” रूपमे देल अछि।
११२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
११२४. (D) लोक पर्व विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व विश्लेषण” अछि।
११२५. (A) लोक पर्व विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
११२६. (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११३०. (B) खण्ड 3912, सूचकांक पंक्ति 2603मे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११३१. (A) हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही — सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” रूपमे देल अछि।
११३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
११३४. (D) साहित्यिक संस्मरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक संस्मरण” अछि।
११३५. (A) साहित्यिक संस्मरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक संस्मरण” रूपमे देखाइत अछि।
११३६. (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११३८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११४०. (B) खण्ड 3913, सूचकांक पंक्ति 2604मे अमरनाथ झाक “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “साहित्यिक संस्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११४१. (A) विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह। — सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” रूपमे देल अछि।
११४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११४३. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
११४४. (D) व्यक्तित्व रेखांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।
११४५. (A) व्यक्तित्व रेखांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।
११४६. (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११४८. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११५०. (B) खण्ड 3914, सूचकांक पंक्ति 2605मे अमरनाथ झाक “विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११५१. (A) पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम — सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” रूपमे देल अछि।
११५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
११५४. (D) आत्मकथात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मकथात्मक” अछि।
११५५. (A) आत्मकथात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
११५६. (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११६०. (B) खण्ड 3915, सूचकांक पंक्ति 2606मे अमरनाथ झाक “पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११६१. (A) आचार्य पंकज — सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक प्रविष्टि “आचार्य पंकज” रूपमे देल अछि।
११६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
११६४. (D) व्यक्तित्व रेखांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।
११६५. (A) व्यक्तित्व रेखांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।
११६६. (B) लेखक अमरनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११७०. (B) खण्ड 3916, सूचकांक पंक्ति 2607मे अमरनाथ झाक “आचार्य पंकज” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११७१. (A) गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक — सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” रूपमे देल अछि।
११७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
११७४. (D) सीआइआइएल — टिप्पणीक पहिल संकेत “सीआइआइएल” अछि।
११७५. (A) सीआइआइएल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीआइआइएल” रूपमे देखाइत अछि।
११७६. (B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११८०. (B) खण्ड 3917, सूचकांक पंक्ति 2608मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सीआइआइएल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११८१. (A) गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर — सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” रूपमे देल अछि।
११८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
११८४. (D) मैथिली मानकीकरणक प्रणेता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” अछि।
११८५. (A) मैथिली मानकीकरणक प्रणेता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” रूपमे देखाइत अछि।
११८६. (B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९०. (B) खण्ड 3918, सूचकांक पंक्ति 2609मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मैथिली मानकीकरणक प्रणेता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११९१. (A) आजुक कालमे बाबा — सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “आजुक कालमे बाबा” रूपमे देल अछि।
११९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
११९४. (D) पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” अछि।
११९५. (A) पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
११९६. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२००. (B) खण्ड 3919, सूचकांक पंक्ति 2610मे विनीत उत्पलक “आजुक कालमे बाबा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “पत्रकारिता आ सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०१. (A) कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार — सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” रूपमे देल अछि।

१२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१२०४. (D) बाख्तिनीय संवाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाख्तिनीय संवाद” अछि।

१२०५. (A) बाख्तिनीय संवाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाख्तिनीय संवाद” रूपमे देखाइत अछि।

१२०६. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२१०. (B) खण्ड 3920, सूचकांक पंक्ति 2611मे विनीत उत्पलक “कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाख्तिनीय संवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२११. (A) कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर — सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” रूपमे देल अछि।

१२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१२१४. (D) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” अछि।

१२१५. (A) साहित्य अकादेमी पुरस्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” रूपमे देखाइत अछि।

१२१६. (B) लेखक डॉ. गंगेश गुंजन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२२०. (B) खण्ड 3921, सूचकांक पंक्ति 2612मे डॉ. गंगेश गुंजनक “कविक आत्मोक्ति:कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्य अकादेमी पुरस्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२२१. (A) यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट — सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” रूपमे देल अछि।

१२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२२३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

१२२४. (D) पारिस्थितिक लेखन — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिस्थितिक लेखन” अछि।

१२२५. (A) पारिस्थितिक लेखन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिस्थितिक लेखन” रूपमे देखाइत अछि।

१२२६. (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२२८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२३०. (B) खण्ड 3922, सूचकांक पंक्ति 2613मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “पारिस्थितिक लेखन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी

रूपमे खोलैत अछि।

१२३१. (A) यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल ! — सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” रूपमे देल अछि।

१२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

१२३४. (D) लोक परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक परम्परा” अछि।

१२३५. (A) लोक परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

१२३६. (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२३८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२४०. (B) खण्ड 3923, सूचकांक पंक्ति 2614मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “लोक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२४१. (A) संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा — सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क प्रविष्टि “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” रूपमे देल अछि।

१२४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१२४४. (D) कोसी बाढ़ि आख्यान — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि आख्यान” अछि।

१२४५. (A) कोसी बाढ़ि आख्यान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी बाढ़ि आख्यान” रूपमे देखाइत अछि।

१२४६. (B) लेखक रामभरोस कापडि 'भ्रमर', विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२५०. (B) खण्ड 3924, सूचकांक पंक्ति 2615मे रामभरोस कापडि 'भ्रमर'क “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कोसी बाढ़ि आख्यान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२५१. (A) मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण — सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” रूपमे देल अछि।

१२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१२५४. (D) अकादमिक साहित्यिक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” अछि।

१२५५. (A) अकादमिक साहित्यिक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१२५६. (B) लेखक कमलानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२६०. (B) खण्ड 3925, सूचकांक पंक्ति 2616मे कमलानन्द झाक “मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२६१. (A) सन्त साहेब रामदास — सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक प्रविष्टि “सन्त साहेब रामदास” रूपमे देल अछि।
१२६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२६३. (C) जीवनी/शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/शोध” अछि।
१२६४. (D) भक्ति परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति परम्परा” अछि।
१२६५. (A) भक्ति परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१२६६. (B) लेखक डॉ पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२६८. (D) ई पाठ जीवनी/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२७०. (B) खण्ड 3926, सूचकांक पंक्ति 2617मे डॉ पालन झाक “सन्त साहेब रामदास” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/शोध आ “भक्ति परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२७१. (A) की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि? — सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक प्रविष्टि “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” रूपमे देल अछि।
१२७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२७३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१२७४. (D) मिथिला राज्य चिन्तक — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला राज्य चिन्तक” अछि।
१२७५. (A) मिथिला राज्य चिन्तक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला राज्य चिन्तक” रूपमे देखाइत अछि।
१२७६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२८०. (B) खण्ड 3927, सूचकांक पंक्ति 2618मे सुशांत झाक “की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “मिथिला राज्य चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२८१. (A) मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य — सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” रूपमे देल अछि।
१२८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१२८४. (D) सांस्कृतिक पहचान — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पहचान” अछि।
१२८५. (A) सांस्कृतिक पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पहचान” रूपमे देखाइत अछि।
१२८६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९०. (B) खण्ड 3928, सूचकांक पंक्ति 2619मे सुशांत झाक “मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२९१. (A) विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला... — सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक प्रविष्टि “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” रूपमे देल अछि।
१२९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१२९४. (D) सामाजिक चिन्ता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्ता” अछि।
१२९५. (A) सामाजिक चिन्ता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।
१२९६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३००. (B) खण्ड 3929, सूचकांक पंक्ति 2620मे सुशांत झाक “विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०१. (A) हमर सपना केर मिथिला — सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक प्रविष्टि “हमर सपना केर मिथिला” रूपमे देल अछि।
१३०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३०४. (D) भविष्यक मिथिला — टिप्पणीक पहिल संकेत “भविष्यक मिथिला” अछि।
१३०५. (A) भविष्यक मिथिला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भविष्यक मिथिला” रूपमे देखाइत अछि।
१३०६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३१०. (B) खण्ड 3930, सूचकांक पंक्ति 2621मे सुशांत झाक “हमर सपना केर मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भविष्यक मिथिला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३११. (A) मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न.. — सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” रूपमे देल अछि।
१३१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३१३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३१४. (D) भाषा आन्दोलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा आन्दोलन” अछि।

१३१५. (A) भाषा आन्दोलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।
१३१६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३१८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३२०. (B) खण्ड 3931, सूचकांक पंक्ति 2622मे सुशांत झाक “मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न..” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३२१. (A) बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान? — सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक प्रविष्टि “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” रूपमे देल अछि।
१३२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३२४. (D) आपदा प्रबन्धन — टिप्पणीक पहिल संकेत “आपदा प्रबन्धन” अछि।
१३२५. (A) आपदा प्रबन्धन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आपदा प्रबन्धन” रूपमे देखाइत अछि।
१३२६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३३०. (B) खण्ड 3932, सूचकांक पंक्ति 2623मे सुशांत झाक “बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आपदा प्रबन्धन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३३१. (A) मिथिला मंथन १-२ — सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मिथिला मंथन १-२” रूपमे देल अछि।
१३३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३३४. (D) क्षेत्रीय विकास — टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीय विकास” अछि।
१३३५. (A) क्षेत्रीय विकास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीय विकास” रूपमे देखाइत अछि।
१३३६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३४०. (B) खण्ड 3933, सूचकांक पंक्ति 2624मे सुशांत झाक “मिथिला मंथन १-२” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “क्षेत्रीय विकास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३४१. (A) मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि — सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक प्रविष्टि “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” रूपमे देल अछि।
१३४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१३४४. (D) भाषा सांस्कृतिक सक्रियता — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” अछि।
१३४५. (A) भाषा सांस्कृतिक सक्रियता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” रूपमे देखाइत अछि।
१३४६. (B) लेखक सुशांत झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३५०. (B) खण्ड 3934, सूचकांक पंक्ति 2625मे सुशांत झाक “मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सांस्कृतिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३५१. (A) कखन बदलब हम — सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक प्रविष्टि “कखन बदलब हम” रूपमे देल अछि।
१३५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३५४. (D) सामाजिक परिवर्तन चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” अछि।
१३५५. (A) सामाजिक परिवर्तन चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
१३५६. (B) लेखक शक्ति शेखर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३६०. (B) खण्ड 3935, सूचकांक पंक्ति 2626मे शक्ति शेखरक “कखन बदलब हम” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक परिवर्तन चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३६१. (A) मिथिले तक नहि छथि मैथिल — सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक प्रविष्टि “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” रूपमे देल अछि।
१३६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३६४. (D) मैथिल पहचान — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल पहचान” अछि।
१३६५. (A) मैथिल पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल पहचान” रूपमे देखाइत अछि।
१३६६. (B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३७०. (B) खण्ड 3936, सूचकांक पंक्ति 2627मे ओमप्रकाश झाक “मिथिले तक नहि छथि मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिल पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३७१. (A) संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन — सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के. कर्णक प्रविष्टि “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” रूपमे देल अछि।
१३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३७३. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१३७४. (D) बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” अछि।
१३७५. (A) बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।
१३७६. (B) लेखक बी.के. कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७८. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३८०. (B) खण्ड 3937, सूचकांक पंक्ति 2628मे बी.के. कर्णक “संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास केना आ कखन” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बोर्दियो क्षेत्र सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३८१. (A) स्वरक माला गँथती अंशु — सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “स्वरक माला गँथती अंशु” रूपमे देल अछि।
१३८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३८३. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
१३८४. (D) जनकपुर, नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।
१३८५. (A) जनकपुर, नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर, नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
१३८६. (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८८. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९०. (B) खण्ड 3938, सूचकांक पंक्ति 2629मे जितेन्द्र झाक “स्वरक माला गँथती अंशु” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “जनकपुर, नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३९१. (A) प्रिय पाहुन — सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “प्रिय पाहुन” रूपमे देल अछि।
१३९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३९३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१३९४. (D) विदेह क्रॉस-बोर्डर — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह क्रॉस-बोर्डर” अछि।
१३९५. (A) विदेह क्रॉस-बोर्डर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह क्रॉस-बोर्डर” रूपमे देखाइत अछि।
१३९६. (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३९८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४००. (B) खण्ड 3939, सूचकांक पंक्ति 2630मे जितेन्द्र झाक “प्रिय पाहुन” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “विदेह क्रॉस-बोर्डर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०१. (A) सुभाष चन्द्र यादव — सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक प्रविष्टि “सुभाष चन्द्र यादव” रूपमे देल अछि।
१४०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४०३. (C) परिचय/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचय/समीक्षा” अछि।

१४०४. (D) कथाकारक रेखांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथाकारक रेखांकन” अछि।
१४०५. (A) कथाकारक रेखांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथाकारक रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।
१४०६. (B) लेखक महाप्रकाश, विधा गद्य, उप-विधा परिचय/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४०८. (D) ई पाठ परिचय/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४१०. (B) खण्ड 3940, सूचकांक पंक्ति 2631मे महाप्रकाशक “सुभाष चन्द्र यादव” प्रविष्टि गद्य, परिचय/समीक्षा आ “कथाकारक रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४११. (A) आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व — सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक प्रविष्टि “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” रूपमे देल अछि।
१४१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४१३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१४१४. (D) सॉफ्टवेयर इंजीनियर — टिप्पणीक पहिल संकेत “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” अछि।
१४१५. (A) सॉफ्टवेयर इंजीनियर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” रूपमे देखाइत अछि।
१४१६. (B) लेखक ज्योति प्रकाश लाल, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४१८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४२०. (B) खण्ड 3941, सूचकांक पंक्ति 2632मे ज्योति प्रकाश लालक “आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सॉफ्टवेयर इंजीनियर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४२१. (A) वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी — सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” रूपमे देल अछि।
१४२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२३. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।
१४२४. (D) मुम्बई — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुम्बई” अछि।
१४२५. (A) मुम्बई — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुम्बई” रूपमे देखाइत अछि।
१४२६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४२८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४३०. (B) खण्ड 3942, सूचकांक पंक्ति 2633मे जितमोहन झाक “वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “मुम्बई” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४३१. (A) कन्या भ्रूण हत्या — सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “कन्या भ्रूण हत्या” रूपमे देल अछि।

१४३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४३३. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

१४३४. (D) बोउआ — टिप्पणीक पहिल संकेत “बोउआ” अछि।

१४३५. (A) बोउआ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बोउआ” रूपमे देखाइत अछि।

१४३६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४३८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४४०. (B) खण्ड 3943, सूचकांक पंक्ति 2634मे जितमोहन झाक “कन्या भ्रूण हत्या” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “बोउआ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४४१. (A) प्रकृति के साथ खिलवार — सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “प्रकृति के साथ खिलवार” रूपमे देल अछि।

१४४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४४३. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

१४४४. (D) पर्यावरण चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण चेतना” अछि।

१४४५. (A) पर्यावरण चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

१४४६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४४८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४५०. (B) खण्ड 3944, सूचकांक पंक्ति 2635मे जितमोहन झाक “प्रकृति के साथ खिलवार” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४५१. (A) हम लड़की वला छी जनाब ... — सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “हम लड़की वला छी जनाब ...” रूपमे देल अछि।

१४५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४५३. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

१४५४. (D) नारीवादी विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारीवादी विमर्श” अछि।

१४५५. (A) नारीवादी विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारीवादी विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

१४५६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४५८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४६०. (B) खण्ड 3945, सूचकांक पंक्ति 2636मे जितमोहन झाक “हम लड़की वला छी जनाब ...” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “नारीवादी विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४६१. (A) नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक? — सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक प्रविष्टि “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” रूपमे देल अछि।

१४६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४६३. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

१४६४. (D) लैंगिक असमानता — टिप्पणीक पहिल संकेत “लैंगिक असमानता” अछि।

१४६५. (A) लैंगिक असमानता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लैंगिक असमानता” रूपमे देखाइत अछि।

१४६६. (B) लेखक जितमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४६८. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४७०. (B) खण्ड 3946, सूचकांक पंक्ति 2637मे जितमोहन झाक “नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “लैंगिक असमानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४७१. (A) बिहारक लोक पर्व-छठि — सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “बिहारक लोक पर्व-छठि” रूपमे देल अछि।

१४७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१४७४. (D) लोक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

१४७५. (A) लोक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

१४७६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४८०. (B) खण्ड 3947, सूचकांक पंक्ति 2638मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारक लोक पर्व-छठि” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४८१. (A) बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र — सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” रूपमे देल अछि।

१४८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४८३. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

१४८४. (D) सांस्कृतिक पत्रकारिता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पत्रकारिता” अछि।

१४८५. (A) सांस्कृतिक पत्रकारिता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।

१४८६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८८. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४९०. (B) खण्ड 3948, सूचकांक पंक्ति 2639मे नवेन्दु कुमार झाक “बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सांस्कृतिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

- १४९१. (A) विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति** — सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” रूपमे देल अछि।
- १४९२. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १४९३. (C) निबन्ध** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
- १४९४. (D) साहित्यिक स्मृति** — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक स्मृति” अछि।
- १४९५. (A) साहित्यिक स्मृति** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।
- १४९६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १४९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १४९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १४९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १५००. (B) खण्ड 3949, सूचकांक पंक्ति 2640मे नवेन्दु कुमार झाक “विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १५०१. (A) उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला** — सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” रूपमे देल अछि।
- १५०२. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १५०३. (C) रिपोर्टाज** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
- १५०४. (D) सामाजिक पत्रकारिता** — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक पत्रकारिता” अछि।
- १५०५. (A) सामाजिक पत्रकारिता** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक पत्रकारिता” रूपमे देखाइत अछि।
- १५०६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १५०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १५०८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १५०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १५१०. (B) खण्ड 3950, सूचकांक पंक्ति 2641मे नवेन्दु कुमार झाक “उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सामाजिक पत्रकारिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १५११. (A) प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर** — सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” रूपमे देल अछि।
- १५१२. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १५१३. (C) रिपोर्टाज** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
- १५१४. (D) सामाजिक मुद्दा** — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मुद्दा” अछि।
- १५१५. (A) सामाजिक मुद्दा** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मुद्दा” रूपमे देखाइत अछि।
- १५१६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १५१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १५१८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५२०. (B) खण्ड 3951, सूचकांक पंक्ति 2642मे नवेन्दु कुमार झाक “प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सामाजिक मुद्दा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५२१. (A) राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ — सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” रूपमे देल अछि।
१५२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१५२४. (D) सामाजिक सक्रियता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सक्रियता” अछि।
१५२५. (A) सामाजिक सक्रियता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सक्रियता” रूपमे देखाइत अछि।
१५२६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५२८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५३०. (B) खण्ड 3952, सूचकांक पंक्ति 2643मे नवेन्दु कुमार झाक “राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सामाजिक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५३१. (A) गाम मे विज्ञान कें लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी — सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक प्रविष्टि “गाम मे विज्ञान कें लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” रूपमे देल अछि।
१५३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१५३४. (D) विज्ञान चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “विज्ञान चेतना” अछि।
१५३५. (A) विज्ञान चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विज्ञान चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
१५३६. (B) लेखक नवेन्दु कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५३८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५४०. (B) खण्ड 3953, सूचकांक पंक्ति 2644मे नवेन्दु कुमार झाक “गाम मे विज्ञान कें लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५४१. (A) सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी — सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” रूपमे देल अछि।
१५४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५४३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
१५४४. (D) सामाजिक जीवनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जीवनी” अछि।
१५४५. (A) सामाजिक जीवनी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जीवनी” रूपमे देखाइत अछि।

१५४६. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५४८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५५०. (B) खण्ड 3954, सूचकांक पंक्ति 2645मे सुजीत कुमार झाक “सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “सामाजिक जीवनी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५५१. (A) एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर — सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” रूपमे देल अछि।
१५५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५५३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
१५५४. (D) कलाकार व्यक्तित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “कलाकार व्यक्तित्व” अछि।
१५५५. (A) कलाकार व्यक्तित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कलाकार व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।
१५५६. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५५८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५६०. (B) खण्ड 3955, सूचकांक पंक्ति 2646मे सुजीत कुमार झाक “एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “कलाकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५६१. (A) थाल माटिक पावनि — सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “थाल माटिक पावनि” रूपमे देल अछि।
१५६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५६३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१५६४. (D) साक्षात्कार शैली — टिप्पणीक पहिल संकेत “साक्षात्कार शैली” अछि।
१५६५. (A) साक्षात्कार शैली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साक्षात्कार शैली” रूपमे देखाइत अछि।
१५६६. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५६८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५७०. (B) खण्ड 3956, सूचकांक पंक्ति 2647मे सुजीत कुमार झाक “थाल माटिक पावनि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “साक्षात्कार शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५७१. (A) मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर — सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक प्रविष्टि “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” रूपमे देल अछि।
१५७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५७३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

१५७४. (D) उपन्यास समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।

१५७५. (A) उपन्यास समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१५७६. (B) लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५७८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५८०. (B) खण्ड 3957, सूचकांक पंक्ति 2648मे डॉ. उमेश मंडलक “मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५८१. (A) कबिलपुरक कथा गोष्ठी — सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक प्रविष्टि “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” रूपमे देल अछि।

१५८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५८३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।

१५८४. (D) साहित्यिक आयोजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आयोजन” अछि।

१५८५. (A) साहित्यिक आयोजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।

१५८६. (B) लेखक डॉ. उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५८८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५९०. (B) खण्ड 3958, सूचकांक पंक्ति 2649मे डॉ. उमेश मंडलक “कबिलपुरक कथा गोष्ठी” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५९१. (A) मानकताक बात विखपाद अछि ! — सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “मानकताक बात विखपाद अछि !” रूपमे देल अछि।

१५९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१५९४. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

१५९५. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।

१५९६. (B) लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६००. (B) खण्ड 3959, सूचकांक पंक्ति 2650मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “मानकताक बात विखपाद अछि !” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६०१. (A) छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व — सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक प्रविष्टि “छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” रूपमे देल अछि।

१६०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६०४. (D) लोक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक पर्व” अछि।

१६०५. (A) लोक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

१६०६. (B) लेखक प्रा परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६१०. (B) खण्ड 3960, सूचकांक पंक्ति 2651मे प्रा परमेश्वर कापड़िक “छठमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६११. (A) सोचब आवश्यक जे..... — सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “सोचब आवश्यक जे.....” रूपमे देल अछि।

१६१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६१३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६१४. (D) मैथिली भाषा चिन्तक — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा चिन्तक” अछि।

१६१५. (A) मैथिली भाषा चिन्तक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा चिन्तक” रूपमे देखाइत अछि।

१६१६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६१८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६२०. (B) खण्ड 3961, सूचकांक पंक्ति 2652मे अतुलेश्वरक “सोचब आवश्यक जे.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा चिन्तक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६२१. (A) मातृभाषा दिवस क बहन्ने — सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” रूपमे देल अछि।

१६२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६२४. (D) भाषा दिवस — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा दिवस” अछि।

१६२५. (A) भाषा दिवस — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा दिवस” रूपमे देखाइत अछि।

१६२६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६३०. (B) खण्ड 3962, सूचकांक पंक्ति 2653मे अतुलेश्वरक “मातृभाषा दिवस क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा दिवस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६३१. (A) गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती — सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” रूपमे देल अछि।

१६३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६३४. (D) लोक संस्कृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति” अछि।
१६३५. (A) लोक संस्कृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।
१६३६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६४०. (B) खण्ड 3963, सूचकांक पंक्ति 2654मे अतुलेश्वरक “गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६४१. (A) तीन तिरहुतिया तेरह पाक — सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” रूपमे देल अछि।
१६४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६४४. (D) लोक कहावत — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक कहावत” अछि।
१६४५. (A) लोक कहावत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक कहावत” रूपमे देखाइत अछि।
१६४६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६५०. (B) खण्ड 3964, सूचकांक पंक्ति 2655मे अतुलेश्वरक “तीन तिरहुतिया तेरह पाक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक कहावत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६५१. (A) समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत — सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” रूपमे देल अछि।
१६५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६५४. (D) साहित्यिक सम्वाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक सम्वाद” अछि।
१६५५. (A) साहित्यिक सम्वाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक सम्वाद” रूपमे देखाइत अछि।
१६५६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६६०. (B) खण्ड 3965, सूचकांक पंक्ति 2656मे अतुलेश्वरक “समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक सम्वाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६६१. (A) यात्रीक प्रसंग — सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “यात्रीक प्रसंग” रूपमे देल अछि।
१६६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६६४. (D) कवि आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि आलोचना” अछि।
१६६५. (A) कवि आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
१६६६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६७०. (B) खण्ड 3966, सूचकांक पंक्ति 2657मे अतुलेश्वरक “यात्रीक प्रसंग” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कवि आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६७१. (A) हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा — सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” रूपमे देल अछि।
१६७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६७४. (D) भाषा राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा राजनीति” अछि।
१६७५. (A) भाषा राजनीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।
१६७६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६८०. (B) खण्ड 3967, सूचकांक पंक्ति 2658मे अतुलेश्वरक “हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६८१. (A) वैश्विक सोच ? — सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “वैश्विक सोच ?” रूपमे देल अछि।
१६८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६८४. (D) वैश्वीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “वैश्वीकरण” अछि।
१६८५. (A) वैश्वीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वैश्वीकरण” रूपमे देखाइत अछि।
१६८६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९०. (B) खण्ड 3968, सूचकांक पंक्ति 2659मे अतुलेश्वरक “वैश्विक सोच ?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “वैश्वीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६९१. (A) भाषाक प्रति एक नव सोच — सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “भाषाक प्रति एक नव सोच” रूपमे देल अछि।
१६९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१६९४. (D) भाषा चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चिन्तन” अछि।

१६९५. (A) भाषा चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
१६९६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७००. (B) खण्ड 3969, सूचकांक पंक्ति 2660मे अतुलेश्वरक “भाषाक प्रति एक नव सोच” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०१. (A) भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति — सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” रूपमे देल अछि।
१७०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७०४. (D) भाषा मानकीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा मानकीकरण” अछि।
१७०५. (A) भाषा मानकीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा मानकीकरण” रूपमे देखाइत अछि।
१७०६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७१०. (B) खण्ड 3970, सूचकांक पंक्ति 2661मे अतुलेश्वरक “भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा मानकीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७११. (A) मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई — सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” रूपमे देल अछि।
१७१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७१३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७१४. (D) बहुलतावाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुलतावाद” अछि।
१७१५. (A) बहुलतावाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बहुलतावाद” रूपमे देखाइत अछि।
१७१६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७१८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७२०. (B) खण्ड 3971, सूचकांक पंक्ति 2662मे अतुलेश्वरक “मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बहुलतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७२१. (A) 'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर — सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “'चिड़ै' आ ओकरे लाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” रूपमे देल अछि।
१७२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१७२४. (D) क्रॉस-बोर्डर कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रॉस-बोर्डर कथा” अछि।
१७२५. (A) क्रॉस-बोर्डर कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रॉस-बोर्डर कथा” रूपमे देखाइत अछि।
१७२६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७३०. (B) खण्ड 3972, सूचकांक पंक्ति 2663मे अतुलेश्वरक “‘चिड़ै’ आ ओकरे लायँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “क्रॉस-बोर्डर कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७३१. (A) ‘बदलैत स्वर’ आ मैथिली आलोचना — सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “‘बदलैत स्वर’ आ मैथिली आलोचना” रूपमे देल अछि।
१७३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
१७३४. (D) साहित्यिक आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आलोचना” अछि।
१७३५. (A) साहित्यिक आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
१७३६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७३८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७४०. (B) खण्ड 3973, सूचकांक पंक्ति 2664मे अतुलेश्वरक “‘बदलैत स्वर’ आ मैथिली आलोचना” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “साहित्यिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७४१. (A) मैथिली : पंडिताम वा आम? — सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली : पंडिताम वा आम?” रूपमे देल अछि।
१७४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७४४. (D) भाषा चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा चेतना” अछि।
१७४५. (A) भाषा चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
१७४६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७५०. (B) खण्ड 3974, सूचकांक पंक्ति 2665मे अतुलेश्वरक “मैथिली : पंडिताम वा आम?” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७५१. (A) पंडित गोविन्द झा — सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “पंडित गोविन्द झा” रूपमे देल अछि।
१७५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१७५४. (D) व्यक्तित्व रेखांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यक्तित्व रेखांकन” अछि।
१७५५. (A) व्यक्तित्व रेखांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यक्तित्व रेखांकन” रूपमे देखाइत अछि।
१७५६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७६०. (B) खण्ड 3975, सूचकांक पंक्ति 2666मे अतुलेश्वरक “पंडित गोविन्द झा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “व्यक्तित्व रेखांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७६१. (A) मैथिली आ अध्ययन — सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “मैथिली आ अध्ययन” रूपमे देल अछि।
१७६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७६४. (D) भाषा अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा अध्ययन” अछि।
१७६५. (A) भाषा अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
१७६६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७७०. (B) खण्ड 3976, सूचकांक पंक्ति 2667मे अतुलेश्वरक “मैथिली आ अध्ययन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७७१. (A) उजरैत गाम बसैत शहर..... — सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “उजरैत गाम बसैत शहर.....” रूपमे देल अछि।
१७७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७७४. (D) ग्रामीण पलायन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पलायन” अछि।
१७७५. (A) ग्रामीण पलायन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पलायन” रूपमे देखाइत अछि।
१७७६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७८०. (B) खण्ड 3977, सूचकांक पंक्ति 2668मे अतुलेश्वरक “उजरैत गाम बसैत शहर.....” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्रामीण पलायन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७८१. (A) विद्यापति समारोह — सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “विद्यापति समारोह” रूपमे देल अछि।
१७८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७८३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१७८४. (D) साहित्यिक आयोजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आयोजन” अछि।

१७८५. (A) साहित्यिक आयोजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।
१७८६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९०. (B) खण्ड 3978, सूचकांक पंक्ति 2669मे अतुलेश्वरक “विद्यापति समारोह” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “साहित्यिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७९१. (A) बिहार गीत आ मैथिल — सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “बिहार गीत आ मैथिल” रूपमे देल अछि।
१७९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१७९४. (D) सांस्कृतिक पहचान — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक पहचान” अछि।
१७९५. (A) सांस्कृतिक पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक पहचान” रूपमे देखाइत अछि।
१७९६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८००. (B) खण्ड 3979, सूचकांक पंक्ति 2670मे अतुलेश्वरक “बिहार गीत आ मैथिल” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सांस्कृतिक पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०१. (A) पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने — सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” रूपमे देल अछि।
१८०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८०३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१८०४. (D) भाषा सेमिनार — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सेमिनार” अछि।
१८०५. (A) भाषा सेमिनार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सेमिनार” रूपमे देखाइत अछि।
१८०६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८०८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८१०. (B) खण्ड 3980, सूचकांक पंक्ति 2671मे अतुलेश्वरक “पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “भाषा सेमिनार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८११. (A) विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ — सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” रूपमे देल अछि।
१८१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८१३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१८१४. (D) अन्तर्भाषिक सम्मान — टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्तर्भाषिक सम्मान” अछि।

१८१५. (A) अन्तर्भाषिक सम्मान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्तर्भाषिक सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।
१८१६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८१८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८२०. (B) खण्ड 3981, सूचकांक पंक्ति 2672मे अतुलेश्वरक “विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “अन्तर्भाषिक सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८२१. (A) धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य — सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक प्रविष्टि “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” रूपमे देल अछि।
१८२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१८२४. (D) गुरु-शिष्य परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गुरु-शिष्य परम्परा” अछि।
१८२५. (A) गुरु-शिष्य परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गुरु-शिष्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१८२६. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८३०. (B) खण्ड 3982, सूचकांक पंक्ति 2673मे अतुलेश्वरक “धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “गुरु-शिष्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८३१. (A) पोथी समीक्षा : गामक जिनगी — सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ॰ शशिधर कुमरक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” रूपमे देल अछि।
१८३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८३४. (D) अकादमिक समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “अकादमिक समीक्षक” अछि।
१८३५. (A) अकादमिक समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकादमिक समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।
१८३६. (B) लेखक डॉ॰ शशिधर कुमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८४०. (B) खण्ड 3983, सूचकांक पंक्ति 2674मे डॉ॰ शशिधर कुमरक “पोथी समीक्षा : गामक जिनगी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अकादमिक समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८४१. (A) पोथी समीक्षा -- अम्बरा — सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ॰ शशिधर कुमरक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” रूपमे देल अछि।
१८४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८४४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।

१८४५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१८४६. (B) लेखक डॉ० शशिधर कुमार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८५०. (B) खण्ड 3984, सूचकांक पंक्ति 2675मे डॉ० शशिधर कुमारक “पोथी समीक्षा -- अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८५१. (A) अक्षरपुरुष-विश्वनाथ — सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक प्रविष्टि “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” रूपमे देल अछि।
१८५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८५३. (C) जीवनी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी” अछि।
१८५४. (D) साहित्यकार व्यक्तित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकार व्यक्तित्व” अछि।
१८५५. (A) साहित्यकार व्यक्तित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकार व्यक्तित्व” रूपमे देखाइत अछि।
१८५६. (B) लेखक सुमित आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८५८. (D) ई पाठ जीवनीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८६०. (B) खण्ड 3985, सूचकांक पंक्ति 2676मे सुमित आनन्दक “अक्षरपुरुष-विश्वनाथ” प्रविष्टि गद्य, जीवनी आ “साहित्यकार व्यक्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८६१. (A) ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी — सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” रूपमे देल अछि।
१८६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८६४. (D) नारी विमर्श समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी विमर्श समीक्षक” अछि।
१८६५. (A) नारी विमर्श समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी विमर्श समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।
१८६६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८७०. (B) खण्ड 3986, सूचकांक पंक्ति 2677मे डॉ. योगानन्द झाक “ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी विमर्श समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८७१. (A) मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा — सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” रूपमे देल अछि।
१८७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१८७४. (D) बाल साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।
१८७५. (A) बाल साहित्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।
१८७६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८८०. (B) खण्ड 3987, सूचकांक पंक्ति 2678मे डॉ. योगानन्द झाक “मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “बाल साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८८१. (A) वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा — सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” रूपमे देल अछि।
१८८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८८४. (D) नारी अस्मिता — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी अस्मिता” अछि।
१८८५. (A) नारी अस्मिता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी अस्मिता” रूपमे देखाइत अछि।
१८८६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९०. (B) खण्ड 3988, सूचकांक पंक्ति 2679मे डॉ. योगानन्द झाक “वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नारी अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८९१. (A) आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल — सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” रूपमे देल अछि।
१८९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८९४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
१८९५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१८९६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९००. (B) खण्ड 3989, सूचकांक पंक्ति 2680मे डॉ. योगानन्द झाक “आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०१. (A) आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह — सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” रूपमे देल अछि।

१९०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१९०४. (D) साहित्यिक प्रवृत्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक प्रवृत्ति” अछि।
१९०५. (A) साहित्यिक प्रवृत्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक प्रवृत्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१९०६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९१०. (B) खण्ड 3990, सूचकांक पंक्ति 2681मे डॉ. योगानन्द झाक “आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक प्रवृत्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९११. (A) इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि — सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक प्रविष्टि “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” रूपमे देल अछि।
१९१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९१३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
१९१४. (D) वार्षिक सर्वेक्षण — टिप्पणीक पहिल संकेत “वार्षिक सर्वेक्षण” अछि।
१९१५. (A) वार्षिक सर्वेक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वार्षिक सर्वेक्षण” रूपमे देखाइत अछि।
१९१६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९१८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९२०. (B) खण्ड 3991, सूचकांक पंक्ति 2682मे डॉ. योगानन्द झाक “इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “वार्षिक सर्वेक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९२१. (A) कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि — सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक प्रविष्टि “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” रूपमे देल अछि।
१९२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२३. (C) श्रद्धाञ्जलि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धाञ्जलि” अछि।
१९२४. (D) साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” अछि।
१९२५. (A) साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” रूपमे देखाइत अछि।
१९२६. (B) लेखक राजेश्वर नेपाली, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९२८. (D) ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९३०. (B) खण्ड 3992, सूचकांक पंक्ति 2683मे राजेश्वर नेपालीक “कवि पं. प्रतापनारायण झा केँ छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “साहित्यिक श्रद्धाञ्जलि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९३१. (A) ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती' — सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” रूपमे देल अछि।

१९३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१९३४. (D) संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” अछि।

१९३५. (A) संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

१९३६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९४०. (B) खण्ड 3993, सूचकांक पंक्ति 2684मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९४१. (A) ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा — सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” रूपमे देल अछि।

१९४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१९४४. (D) ग्रन्थ समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रन्थ समीक्षा” अछि।

१९४५. (A) ग्रन्थ समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रन्थ समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१९४६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९५०. (B) खण्ड 3994, सूचकांक पंक्ति 2685मे बिपिन झाक “ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रन्थ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९५१. (A) श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म — सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक प्रविष्टि “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” रूपमे देल अछि।

१९५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१९५४. (D) सामाजिक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विश्लेषण” अछि।

१९५५. (A) सामाजिक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

१९५६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९६०. (B) खण्ड 3995, सूचकांक पंक्ति 2686मे बिपिन झाक “श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९६१. (A) जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य — सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक प्रविष्टि “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” रूपमे देल अछि।
१९६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९६३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१९६४. (D) दार्शनिक परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक परम्परा” अछि।
१९६५. (A) दार्शनिक परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
१९६६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९६८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९७०. (B) खण्ड 3996, सूचकांक पंक्ति 2687मे बिपिन झाक “जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “दार्शनिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९७१. (A) कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम् — सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक प्रविष्टि “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” रूपमे देल अछि।
१९७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९७३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
१९७४. (D) संस्कृत भाषा चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत भाषा चिन्तन” अछि।
१९७५. (A) संस्कृत भाषा चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत भाषा चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
१९७६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९८०. (B) खण्ड 3997, सूचकांक पंक्ति 2688मे बिपिन झाक “कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम्” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “संस्कृत भाषा चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९८१. (A) ये बान्धवाऽबान्धवा वा — सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक प्रविष्टि “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” रूपमे देल अछि।
१९८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१९८४. (D) सामाजिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।
१९८५. (A) सामाजिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
१९८६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९०. (B) खण्ड 3998, सूचकांक पंक्ति 2689मे बिपिन झाक “ये बान्धवाऽबान्धवा वा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९९१. (A) चहकैत चौक आ कनैत दलान — सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक प्रविष्टि “चहकैत चौक आ कनैत दलान” रूपमे देल अछि।
१९९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१९९४. (D) ग्राम संस्कृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम संस्कृति” अछि।
१९९५. (A) ग्राम संस्कृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।
१९९६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०००. (B) खण्ड 3999, सूचकांक पंक्ति 2690मे बिपिन झाक “चहकैत चौक आ कनैत दलान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “ग्राम संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२००१. (A) आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक — सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक प्रविष्टि “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” रूपमे देल अछि।
२००२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२००३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२००४. (D) सामाजिक चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक चिन्तन” अछि।
२००५. (A) सामाजिक चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
२००६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२००७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२००८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२००९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०१०. (B) खण्ड 4000, सूचकांक पंक्ति 2691मे बिपिन झाक “आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०११. (A) स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका — सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक प्रविष्टि “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” रूपमे देल अछि।
२०१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०१३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
२०१४. (D) साहित्यिक इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक इतिहास” अछि।
२०१५. (A) साहित्यिक इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
२०१६. (B) लेखक बिपिन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०१८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०२०. (B) खण्ड 4001, सूचकांक पंक्ति 2692मे बिपिन झाक “स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०२१. (A) साहित्य-सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर-ताल — सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “साहित्य-सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर-ताल” रूपमे देल अछि।
२०२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२०२४. (D) गीत-संगीत समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-संगीत समीक्षा” अछि।
२०२५. (A) गीत-संगीत समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गीत-संगीत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२०२६. (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०३०. (B) खण्ड 4002, सूचकांक पंक्ति 2693मे डा. राजेन्द्र विमलक “साहित्य-सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर-ताल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गीत-संगीत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०३१. (A) 'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया — सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” रूपमे देल अछि।
२०३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२०३४. (D) कृति प्रभाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति प्रभाव” अछि।
२०३५. (A) कृति प्रभाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति प्रभाव” रूपमे देखाइत अछि।
२०३६. (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०४०. (B) खण्ड 4003, सूचकांक पंक्ति 2694मे डा. राजेन्द्र विमलक “'घरमुहौ' -- प्रभाव आ प्रतिक्रिया” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति प्रभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०४१. (A) नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिदी — सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक प्रविष्टि “नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिदी” रूपमे देल अछि।
२०४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२०४४. (D) कथा समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा समीक्षा” अछि।
२०४५. (A) कथा समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

२०४६. (B) लेखक डा. राजेन्द्र विमल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०५०. (B) खण्ड 4004, सूचकांक पंक्ति 2695मे डा. राजेन्द्र विमलक “नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०५१. (A) मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा — सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक प्रविष्टि “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” रूपमे देल अछि।
२०५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०५३. (C) पाकविधि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाकविधि” अछि।
२०५४. (D) मिथिलाक खानपान संस्कृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक खानपान संस्कृति” अछि।
२०५५. (A) मिथिलाक खानपान संस्कृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक खानपान संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।
२०५६. (B) लेखक नीलिमा, विधा गद्य, उप-विधा पाकविधि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०५८. (D) ई पाठ पाकविधिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०६०. (B) खण्ड 4005, सूचकांक पंक्ति 2696मे नीलिमाक “मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा” प्रविष्टि गद्य, पाकविधि आ “मिथिलाक खानपान संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०६१. (A) मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता — सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक प्रविष्टि “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” रूपमे देल अछि।
२०६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०६३. (C) शोध-लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।
२०६४. (D) सॉसुर संकेत सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” अछि।
२०६५. (A) सॉसुर संकेत सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।
२०६६. (B) लेखक छवि झा/ कुमुद सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०६८. (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०७०. (B) खण्ड 4006, सूचकांक पंक्ति 2697मे छवि झा/ कुमुद सिंहक “मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “सॉसुर संकेत सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०७१. (A) जानकी-नवमी — सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक प्रविष्टि “जानकी-नवमी” रूपमे देल अछि।
२०७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०७३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२०७४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२०७५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२०७६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०७८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०८०. (B) खण्ड 4007, सूचकांक पंक्ति 2698मे नूतन झाक “जानकी-नवमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०८१. (A) वटसावित्री — सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक प्रविष्टि “वटसावित्री” रूपमे देल अछि।
२०८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२०८४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२०८५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२०८६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०९०. (B) खण्ड 4008, सूचकांक पंक्ति 2699मे नूतन झाक “वटसावित्री” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०९१. (A) कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी — सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक प्रविष्टि “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” रूपमे देल अछि।
२०९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२०९४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२०९५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२०९६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२०९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२०९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१००. (B) खण्ड 4009, सूचकांक पंक्ति 2700मे नूतन झाक “कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१०१. (A) कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या — सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक प्रविष्टि “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” रूपमे देल अछि।
२१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

२१०४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२१०५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२१०६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२११०. (B) खण्ड 4010, सूचकांक पंक्ति 2701मे नूतन झाक “कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१११. (A) दुर्गा पूजा — सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक प्रविष्टि “दुर्गा पूजा” रूपमे देल अछि।
२११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२११३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२११४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२११५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२११६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२११८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१२०. (B) खण्ड 4011, सूचकांक पंक्ति 2702मे नूतन झाक “दुर्गा पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१२१. (A) शरत्पूर्णिमा / कोजगरा — सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक प्रविष्टि “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” रूपमे देल अछि।
२१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१२३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२१२४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२१२५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२१२६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१२८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१३०. (B) खण्ड 4012, सूचकांक पंक्ति 2703मे नूतन झाक “शरत्पूर्णिमा / कोजगरा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१३१. (A) दीपावली — सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक प्रविष्टि “दीपावली” रूपमे देल अछि।
२१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२१३४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।

२१३५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२१३६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१४०. (B) खण्ड 4013, सूचकांक पंक्ति 2704मे नूतन झाक “दीपावली” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१४१. (A) मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया — सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक प्रविष्टि “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” रूपमे देल अछि।
२१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२१४४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२१४५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।
२१४६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१५०. (B) खण्ड 4014, सूचकांक पंक्ति 2705मे नूतन झाक “मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१५१. (A) बाराती-सत्कार — सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक प्रविष्टि “बाराती-सत्कार” रूपमे देल अछि।
२१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१५३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२१५४. (D) लोक संस्कृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक संस्कृति” अछि।
२१५५. (A) लोक संस्कृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।
२१५६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१५८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१६०. (B) खण्ड 4015, सूचकांक पंक्ति 2706मे नूतन झाक “बाराती-सत्कार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “लोक संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१६१. (A) चौठचन्द्र पूजा — सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक प्रविष्टि “चौठचन्द्र पूजा” रूपमे देल अछि।
२१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१६३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२१६४. (D) मिथिलाक पर्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक पर्व” अछि।
२१६५. (A) मिथिलाक पर्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक पर्व” रूपमे देखाइत अछि।

२१६६. (B) लेखक नूतन झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१६८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१७०. (B) खण्ड 4016, सूचकांक पंक्ति 2707मे नूतन झाक “चौथचन्द्र पूजा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मिथिलाक पर्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१७१. (A) पंजी प्रबंध — सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क प्रविष्टि “पंजी प्रबंध” रूपमे देल अछि।
२१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१७३. (C) शोध-लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।
२१७४. (D) पञ्जी परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पञ्जी परम्परा” अछि।
२१७५. (A) पञ्जी परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पञ्जी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२१७६. (B) लेखक विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी', विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१७८. (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१८०. (B) खण्ड 4017, सूचकांक पंक्ति 2708मे विद्यानन्द झा पजीकार 'मोहनजी'क “पंजी प्रबंध” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “पञ्जी परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१८१. (A) २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना — सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” रूपमे देल अछि।
२१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१८३. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
२१८४. (D) समकालीन उपन्यास विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” अछि।
२१८५. (A) समकालीन उपन्यास विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
२१८६. (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१८८. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१९०. (B) खण्ड 4018, सूचकांक पंक्ति 2709मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “समकालीन उपन्यास विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१९१. (A) हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी — सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक प्रविष्टि “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रूपमे देल अछि।
२१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१९३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२१९४. (D) पाठकीय प्रतिक्रिया — टिप्पणीक पहिल संकेत “पाठकीय प्रतिक्रिया” अछि।

२१९५. (A) पाठकीय प्रतिक्रिया — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाठकीय प्रतिक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।
२१९६. (B) लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१९८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२००. (B) खण्ड 4019, सूचकांक पंक्ति 2710मे खुशबू झाक “हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पाठकीय प्रतिक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२०१. (A) मैथिली कथा संग्रह जिदी पढलापर — सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक प्रविष्टि “मैथिली कथा संग्रह जिदी पढलापर” रूपमे देल अछि।
२२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२०४. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।
२२०५. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२०६. (B) लेखक खुशबू झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२१०. (B) खण्ड 4020, सूचकांक पंक्ति 2711मे खुशबू झाक “मैथिली कथा संग्रह जिदी पढलापर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२११. (A) समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी — सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक प्रविष्टि “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” रूपमे देल अछि।
२२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२१३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२१४. (D) रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” अछि।
२२१५. (A) रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
२२१६. (B) लेखक चन्द्रकिशोर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२१८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२२०. (B) खण्ड 4021, सूचकांक पंक्ति 2712मे चन्द्रकिशोरक “समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रिपोर्ताज शैली मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२२१. (A) सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै' — सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक प्रविष्टि “सामाजिक मूल्य मान्यताकेँ चोच मारैत 'चिड़ै'” रूपमे देल अछि।
२२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२२४. (D) कथा संग्रह आलोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह आलोचना” अछि।
२२२५. (A) कथा संग्रह आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह आलोचना” रूपमे देखाइत अछि।
२२२६. (B) लेखक सुदीप झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२३०. (B) खण्ड 4022, सूचकांक पंक्ति 2713मे सुदीप झाक “सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२३१. (A) चिरबिर-चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै — सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक प्रविष्टि “चिरबिर-चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै” रूपमे देल अछि।
२२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२३४. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।
२२३५. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२३६. (B) लेखक राजेश कुमार कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२४०. (B) खण्ड 4023, सूचकांक पंक्ति 2714मे राजेश कुमार कर्णक “चिरबिर-चिरबिर करैत उडि रहल चिड़ै” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२४१. (A) रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै' — सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” रूपमे देल अछि।
२२४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२४४. (D) साहित्यिक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक समीक्षा” अछि।
२२४५. (A) साहित्यिक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२४६. (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२५०. (B) खण्ड 4024, सूचकांक पंक्ति 2715मे चन्द्रेशक “रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२५१. (A) संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा — सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” रूपमे देल अछि।
२२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२५३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२५४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
२२५५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२५६. (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२५८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२६०. (B) खण्ड 4025, सूचकांक पंक्ति 2716मे चन्द्रेशक “संवेनशील मोनकें छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२६१. (A) यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव — सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक प्रविष्टि “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” रूपमे देल अछि।
२२६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२६३. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
२२६४. (D) सांस्कृतिक आयोजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक आयोजन” अछि।
२२६५. (A) सांस्कृतिक आयोजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक आयोजन” रूपमे देखाइत अछि।
२२६६. (B) लेखक चन्द्रेश, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२६८. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२७०. (B) खण्ड 4026, सूचकांक पंक्ति 2717मे चन्द्रेशक “यथार्थक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सांस्कृतिक आयोजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२७१. (A) नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण — सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” रूपमे देल अछि।
२२७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२७३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२७४. (D) रंगमञ्च समीक्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च समीक्षक” अछि।
२२७५. (A) रंगमञ्च समीक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च समीक्षक” रूपमे देखाइत अछि।
२२७६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२७८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२८०. (B) खण्ड 4027, सूचकांक पंक्ति 2718मे प्रकाश झाक “नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रंगमञ्च समीक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२८१. (A) 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि — सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” रूपमे देल अछि।
२२८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२८३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
२२८४. (D) नाटक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाटक समीक्षा” अछि।
२२८५. (A) नाटक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाटक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२८६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२८८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२९०. (B) खण्ड 4028, सूचकांक पंक्ति 2719मे प्रकाश झाक “'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “नाटक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२९१. (A) प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग — सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” रूपमे देल अछि।
२२९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२९३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
२२९४. (D) रंगमञ्च प्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च प्रयोग” अछि।
२२९५. (A) रंगमञ्च प्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।
२२९६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२९८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३००. (B) खण्ड 4029, सूचकांक पंक्ति 2720मे प्रकाश झाक “प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३०१. (A) पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” रूपमे देल अछि।
२३०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३०३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२३०४. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
२३०५. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२३०६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३०८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३१०. (B) खण्ड 4030, सूचकांक पंक्ति 2721मे प्रकाश झाक “पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३११. (A) रंगदृष्टि — सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “रंगदृष्टि” रूपमे देल अछि।
२३१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३१३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
२३१४. (D) रंगमञ्च सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमञ्च सिद्धान्त” अछि।
२३१५. (A) रंगमञ्च सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमञ्च सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।
२३१६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३१८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३२०. (B) खण्ड 4031, सूचकांक पंक्ति 2722मे प्रकाश झाक “रंगदृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “रंगमञ्च सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३२१. (A) मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि — सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक प्रविष्टि “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” रूपमे देल अछि।
२३२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३२३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
२३२४. (D) समकालीन रंगकला — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन रंगकला” अछि।
२३२५. (A) समकालीन रंगकला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन रंगकला” रूपमे देखाइत अछि।
२३२६. (B) लेखक प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३२८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३३०. (B) खण्ड 4032, सूचकांक पंक्ति 2723मे प्रकाश झाक “मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन रंगकला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३३१. (A) मिथिला कवि कोकिल विद्यापति — सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” रूपमे देल अछि।
२३३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३३३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२३३४. (D) मैथिली भाषा गति — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा गति” अछि।
२३३५. (A) मैथिली भाषा गति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा गति” रूपमे देखाइत अछि।
२३३६. (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३३८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३४०. (B) खण्ड 4033, सूचकांक पंक्ति 2724मे गोपाल प्रसादक “मिथिला कवि कोकिल विद्यापति” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “मैथिली भाषा गति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३४१. (A) हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा — सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” रूपमे देल अछि।
२३४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३४३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२३४४. (D) भाषा सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा सम्बन्ध” अछि।
२३४५. (A) भाषा सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
२३४६. (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३४८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३५०. (B) खण्ड 4034, सूचकांक पंक्ति 2725मे गोपाल प्रसादक “हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “भाषा सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३५१. (A) सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा — सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक प्रविष्टि “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” रूपमे देल अछि।
२३५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३५३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
२३५४. (D) भाषा आ समाज — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा आ समाज” अछि।
२३५५. (A) भाषा आ समाज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा आ समाज” रूपमे देखाइत अछि।
२३५६. (B) लेखक गोपाल प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३५८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३६०. (B) खण्ड 4035, सूचकांक पंक्ति 2726मे गोपाल प्रसादक “सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “भाषा आ समाज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३६१. (A) मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा — सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक प्रविष्टि “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” रूपमे देल अछि।
२३६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३६३. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
२३६४. (D) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” अछि।
२३६५. (A) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” रूपमे देखाइत अछि।

२३६६. (B) लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३६८. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३७०. (B) खण्ड 4036, सूचकांक पंक्ति 2727मे पंचानन मिश्रक “मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३७१. (A) मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ — सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक प्रविष्टि “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” रूपमे देल अछि।
२३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३७३. (C) शोध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध” अछि।
२३७४. (D) धार्मिक स्थल शोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “धार्मिक स्थल शोध” अछि।
२३७५. (A) धार्मिक स्थल शोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धार्मिक स्थल शोध” रूपमे देखाइत अछि।
२३७६. (B) लेखक पंचानन मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३७८. (D) ई पाठ शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३८०. (B) खण्ड 4037, सूचकांक पंक्ति 2728मे पंचानन मिश्रक “मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ” प्रविष्टि गद्य, शोध आ “धार्मिक स्थल शोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३८१. (A) चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ — सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक प्रविष्टि “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” रूपमे देल अछि।
२३८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३८३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२३८४. (D) साहित्यिक इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक इतिहास” अछि।
२३८५. (A) साहित्यिक इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
२३८६. (B) लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३८८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३९०. (B) खण्ड 4038, सूचकांक पंक्ति 2729मे भीमनाथ झाक “चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “साहित्यिक इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३९१. (A) मखान खानि ई मिथिला — सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक प्रविष्टि “मखान खानि ई मिथिला” रूपमे देल अछि।
२३९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३९३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२३९४. (D) कृषि संस्कृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृषि संस्कृति” अछि।
२३९५. (A) कृषि संस्कृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृषि संस्कृति” रूपमे देखाइत अछि।

२३९६. (B) लेखक भीमनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३९८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४००. (B) खण्ड 4039, सूचकांक पंक्ति 2730मे भीमनाथ झाक “मखान खानि ई मिथिला” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “कृषि संस्कृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४०१. (A) पाकिस्तान मे सेक्स-विचार — सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक प्रविष्टि “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” रूपमे देल अछि।
२४०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४०३. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
२४०४. (D) सामाजिक विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विमर्श” अछि।
२४०५. (A) सामाजिक विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
२४०६. (B) लेखक कुमार राधारमण, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४०८. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४१०. (B) खण्ड 4040, सूचकांक पंक्ति 2731मे कुमार राधारमणक “पाकिस्तान मे सेक्स-विचार” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सामाजिक विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४११. (A) मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली — सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक प्रविष्टि “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” रूपमे देल अछि।
२४१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४१३. (C) शोध-लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।
२४१४. (D) ऐतिहासिक पुरातत्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “ऐतिहासिक पुरातत्व” अछि।
२४१५. (A) ऐतिहासिक पुरातत्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऐतिहासिक पुरातत्व” रूपमे देखाइत अछि।
२४१६. (B) लेखक डा. शंकरदेवझा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४१८. (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४२०. (B) खण्ड 4041, सूचकांक पंक्ति 2732मे डा. शंकरदेवझाक “मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “ऐतिहासिक पुरातत्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४२१. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन — सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” रूपमे देल अछि।
२४२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४२३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४२४. (D) पत्र शैलीक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्र शैलीक समीक्षा” अछि।

२४२५. (A) पत्र शैलीक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्र शैलीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४२६. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४२८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४३०. (B) खण्ड 4042, सूचकांक पंक्ति 2733मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र शैलीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४३१. (A) जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर — सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” रूपमे देल अछि।
२४३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४३३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४३४. (D) उपन्यास मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास मूल्यांकन” अछि।
२४३५. (A) उपन्यास मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
२४३६. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४३८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४४०. (B) खण्ड 4043, सूचकांक पंक्ति 2734मे राजदेव मंडलक “जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४४१. (A) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक प्रविष्टि “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
२४४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४४३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४४४. (D) पत्रोत्तर समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रोत्तर समीक्षा” अछि।
२४४५. (A) पत्रोत्तर समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रोत्तर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४४६. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४४८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४५०. (B) खण्ड 4044, सूचकांक पंक्ति 2735मे राजदेव मंडलक “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्रोत्तर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४५१. (A) मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास — सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक प्रविष्टि “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” रूपमे देल अछि।

२४५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४५३. (C) शोध-लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।

२४५४. (D) अनुवाद सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद सिद्धान्त” अछि।

२४५५. (A) अनुवाद सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

२४५६. (B) लेखक डॉ. मेघन प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४५८. (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४६०. (B) खण्ड 4045, सूचकांक पंक्ति 2736मे डॉ. मेघन प्रसादक “मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४६१. (A) दू-पत्र: एक विश्लेषण — सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक प्रविष्टि “दू-पत्र: एक विश्लेषण” रूपमे देल अछि।

२४६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४६३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

२४६४. (D) पत्र साहित्य विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्र साहित्य विश्लेषण” अछि।

२४६५. (A) पत्र साहित्य विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्र साहित्य विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

२४६६. (B) लेखक डॉ. इन्दुधर झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४६८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४७०. (B) खण्ड 4046, सूचकांक पंक्ति 2737मे डॉ. इन्दुधर झाक “दू-पत्र: एक विश्लेषण” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “पत्र साहित्य विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४७१. (A) समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा — सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक प्रविष्टि “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” रूपमे देल अछि।

२४७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४७३. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

२४७४. (D) समकालीन कथा यथार्थवोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन कथा यथार्थवोध” अछि।

२४७५. (A) समकालीन कथा यथार्थवोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन कथा यथार्थवोध” रूपमे देखाइत अछि।

२४७६. (B) लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४७८. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४८०. (B) खण्ड 4047, सूचकांक पंक्ति 2738मे रामलोचन ठाकुरक “समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “समकालीन कथा यथार्थवोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४८१. (A) जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि — सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” रूपमे देल अछि।
२४८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४८३. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४८४. (D) कृति विशेष समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति विशेष समीक्षा” अछि।
२४८५. (A) कृति विशेष समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति विशेष समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४८६. (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४८८. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४९०. (B) खण्ड 4048, सूचकांक पंक्ति 2739मे केदार काननक “जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति विशेष समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४९१. (A) साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव — सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक प्रविष्टि “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” रूपमे देल अछि।
२४९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४९३. (C) श्रद्धाञ्जलि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “श्रद्धाञ्जलि” अछि।
२४९४. (D) गजल परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजल परम्परा” अछि।
२४९५. (A) गजल परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजल परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२४९६. (B) लेखक श्यामसुन्दर शशि, विधा गद्य, उप-विधा श्रद्धाञ्जलि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४९८. (D) ई पाठ श्रद्धाञ्जलिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५००. (B) खण्ड 4049, सूचकांक पंक्ति 2740मे श्यामसुन्दर शशिक “साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव” प्रविष्टि गद्य, श्रद्धाञ्जलि आ “गजल परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।